भारत के छः विख्यात महालक्ष्मी मंदिर

हिन्दू धर्मग्रंथों और पुराणों में धन और समृद्धि की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी या लक्ष्मी को माना गया है। महालक्ष्मी की पूजा और आराधना के लिए यूं तो पूरे देश में अनेक मंदिर हैं, लेकिन निम्न हैं भारत के 6 विख्यात महालक्ष्मी मंदिर जहां धन और समृद्धि की मन्नतें लिए पूरी दुनिया से श्रद्धालु आते हैं–

महालक्ष्मी मंदिर, कोल्हापुर

कोल्हापुर में स्थित महालक्ष्मी मंदिर न केवल महाराष्ट्र बल्कि देश का सबसे प्रसिद्ध लक्ष्मी मंदिर माना जाता है। इतिहास में दर्ज तथ्यों के अनुसार इस मंदिर का निर्माण सातवीं सदी चालुक्य वंश के शासक कर्णदेव ने करवाया था। प्रचलित जनश्रुति के अनुसार यहां की लक्ष्मी प्रतिमा लगभग 7,000 साल पुरानी है।

इस मंदिर की विशेषता यह है कि यहां सूर्य भगवान अपनी किरणों से स्वयं देवी लक्ष्मी का पद–अभिषेक करते हैं।

जनवरी और फरवरी के महीने में सूर्य की किरणें देवी के पैरों का वंदन करती हुई मध्य भाग से गुजरते हुए फिर देवी का मुखमंडल को रोशन करती हैं, जो कि एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करता है।

लक्ष्मीनारायण मंदिर, नई दिल्ली

भारत की राजधानी नई दिल्ली में स्थित लक्ष्मीनारायण मंदिर में देवी लक्ष्मी भगवान विष्णु के साथ विराजित हैं। इस मंदिर का पुनरूद्धार सन् 1938 में उद्योगपति जी. डी. बिरला द्वारा करवाया गया था, जिसे मूल रुप से सन् 1622 ईस्वी में वीरसिंह देव ने बनवाया था।

भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित इस मंदिर में जन्माष्टमी और दीपावली पूजा विशेष तौर मनाई जाती है।

पद्मावती मंदिर, तिरुचुरा

आंध्र प्रदेश में तिरुपति के पास तिरुचुरा नामक एक गांव है। इस गांव में देवी पद्मावती का सुंदर मंदिर स्थित है। लोक मान्यता है कि तिरुपति बालाजी के मंदिर में मांगी गयी मन्नतें तभी पूरी होती है, जब श्रद्धालु बालाजी के साथ–साथ देवी पद्मावती का आशीर्वाद भी ले लेते हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार देवी पद्मावती का जन्म कमल के फूल से हुआ है, जो इस मंदिर के तालाब में खिला था।

महालक्ष्मी मंदिर, इंदौर

कभी होल्कर राजाओं की राजधानी रहे मध्य प्रदेश के इंदौर में स्थित श्री महालक्ष्मी मंदिर का निर्माण सन 1832 ईस्वी में मल्हारराव होल्कर (द्वितीय) ने करवाया था। प्रतिदिन यहां हजारों की संख्या में श्रद्धालु देवी महालक्ष्मी का दर्शन करते हैं। पंडितों के अनुसार इंदौर के मल्हारी मार्तंड मंदिर के साथ इस प्राचीन महालक्ष्मी मंदिर में सुश्रंगारित प्रतिमा का बहुत अधिक महत्व है।

श्रीपुरम् का स्वर्ण मंदिर

प्रायद्वीपीय राज्य तमिलनाडु के वेल्लू जिले के श्रीपुरम् गांव में अवस्थित श्री महालक्ष्मी मंदिर को 'दक्षिण भारत का स्वर्ण मंदिर' के रूप में जाना जाता है। 100 एकड़ में फैला मंदिर यह मंदिर पहले आम जनता के दर्शन के लिए बंद था, जो 2007 में सभी के लिए खोल दिया गया।

पलार नदी के किनारे स्थित इस मंदिर को न केवल धार्मिक बल्कि ऐतिहासिक– सृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण माना जाता है।

महालक्ष्मी मंदिर, मुंबई

मुंबई का महालक्ष्मी मंदिर इस शहर के सर्वाधिक प्राचीन मंदिरों में से एक है। अरब सागर के किनारे बी. देसाई मार्ग पर स्थित यह मंदिर लाखों लोगों की आस्था का प्रमुख केंद्र है। यहां हर दिन श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ती है।

महालक्ष्मी मंदिर में धन की देवी महालक्ष्मी के साथ देवी महाकाली एवं महासरस्वती की प्रतिमाएं एक साथ विद्यमान हैं। भक्तों का दृढ़ विश्वास है कि यहां उनकी इच्छाएं जरूर पूरी होंगी।

(श्यामनंदन द्वारा लिखित, 30 नवम्बर, 2016)
http://khabar.ndtv.com

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

'हारने या जीतने की तुलना में जीवन में और भी महत्वपूर्ण चीजें होती हैं।'
-लियोनेल मेस्सी

वर्ष 20 अंक 01

जनवरी 16-31, 2017

माघ कृष्ण-शुक्ल पक्ष

वि. सं. 2072
युगाब्द 5117

संरक्षक मण्डल
श्री विष्णुहरि डालमिया

सम्पादक
मानवेन्द्र नाथ पंकज

परामर्शदाता
सर्वश्री
डॉ. नन्दकिशोर त्रिखा,
राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार

व्यवस्था - श्री दूधनाथ शुक्ल

मो. -09582555152

सज्जा - श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम,
प्रभाग - 6
रामकृष्ण पुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152
011-26178992,
011-26103495
ईमेल-hinduvishwa@gmail.com

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए .....$ 50 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित
एक प्रति .....10 ₹
वार्षिक .....200 ₹
त्रिवर्षीय.....500 ₹
पंचवर्षीय .....800 ₹
दसवर्षीय.....1,500 ₹
पन्द्रह वर्षीय.....2,100 ₹

कुल पेज - 28

14 विहिप-प्रन्यासी मण्डल बैठक 29-31 दिसंबर, 2016 मां उमियाधाम, भण्डारा रोड, नागपुर (महा0)

सम्पादकीय

सेना अधिकारी के वक्तव्य के निहितार्थ 04

इस्लामी कट्टरपंथियों व सेक्युलरिस्टों के गठजोड़ का शिकार बने शरणार्थी!.....05

प. पाक से आये शरणार्थी रोएं या हंसें? 07

कश्मीर में सेना की जीत को राजनीतिज्ञों ने हार में बदला 08

भगवान के प्रति भिखारी का ऐसा समर्पण! 09

रास्ट्रीय जनसंख्या नीति बनाने की मांग 10

हलाला से बचने के लिए दुष्कर्म पीड़िता फरार 11

क्या संसद राजनीतिक दलों के हाथों बंधक बन गई है? 12

हिन्दू सुरक्षा के लिए 'जटायु सूत्र' पर चलेगी विहिप 14

ग्राम शिक्षा मंदिर द्वारा सामाजिक समरसता को मूर्तरूप 17

अ.भा. पूर्णकालिक कार्यकर्ता वर्ग 18

मीडियाकर्मियों के लिए नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर 19

भीलवाड़ा में मौन प्रदर्शन.....20

आतंकवाद को प्रश्रय पर सवाल 21

सोमनाथ में गोवर्धन मठ पीठाधीश्वर 22

ब्रह्मलीन धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज 23

केंद्र को पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाने के पर्याप्त कारण : डॉ. स्वामी 24

जर्सी गायों के पाद से ओजोन लेयर में हो रहा छेद : वैज्ञानिक 25

रामायण के लिए छोड़ दी अंग्रेजी 26

मानवेन्द्र नाथ पंकज

सेना अधिकारी के वक्तव्य के निहितार्थ

थल सेना की पूर्वी कमांड के प्रमुख लेफ्टी. जनरल प्रवीण बख्शी ने कहा है–'एक माह से मेरा (बख्शी) नाम लेकर बहुत कुछ कहा जा रहा है। यह ठीक नहीं है, मैं नए सेनाध्यक्ष को सहयोग करूंगा। सेना के नाम पर राजनीति नहीं होनी चाहिए।' (वक्तव्य अक्षरशः नहीं मिला है, इसकी पुष्टि प्रतीक्षित है।)

सवाल यह है कि इससे पाक के सुर में सुर मिलाते तथाकथित सेक्युलर कॉकस विशेषतः प्रमुख विपक्षी दल को शर्मसार क्यों नहीं होना चाहिए?ध्यान रहे 71 के युद्ध के बाद तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने वायुसेनाध्यक्ष, 84 के ब्ल्यू स्टार आपरेशन से पूर्व थलसेनाध्यक्ष तथा यू पी ए सरकार ने नौसेना अध्यक्ष पर वरिष्ठता को नजरअंदाज किया था। सबसे शर्मनाक तो लेफ्टी. जन. एस.के. सिन्हा को परे रखते हुए ले. जन. ए. एस वैद्य की सेनाध्यक्ष पद पर नियुक्ति थी। बताया जाता है कि सिन्हा की क्षमता व वरिष्ठता को केवल इसलिए दरकिनार किया गया था क्योंकि वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी–बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिन्हा के सुपुत्र थे।

यही कांग्रेस लेफ्टी. जन. विपिन रावत की थलसेनाध्यक्ष पद पर नियुक्ति होते ही आसमान सर पर उठाने लगी, यहां तक कि मुस्लिम को नजरअंदाज करने की शोशेबाजी भी शुरु कर दी। सबसे वरिष्ठ सेनाधिकारी प्रवीण बख्शी का वक्तव्य सैनिक का अपने देश के प्रति समर्पण व उनकी दरियादिली को प्रदर्शित करता है।

कुछ ही माह पूर्व जब लेफ्टी. जन. विपिन रावत उप थलसेनाध्यक्ष बने तो यह लगने लगा था कि वे ही वर्ष 2017 में नए सेनाध्यक्ष बनेंगे। अब तक कांग्रेस चुप रही। जब उसे पता चला लेफ्टी. जन. बख्शी के साथ ही लेफ्टी.जन. हमीजा भी पीछे छूट गए हैं, तब उसने मुस्लिम कार्ड खेलने में देर नहीं की।

कुछ ही माह पूर्व पाक में सुपर पावर माने जाने वाले राहिल शरीफ के स्थान पर नवनियुक्त सेनाध्यक्ष ले. जन. हमीजा व भारत के नए थल सेना अध्यक्ष की नियुक्ति में कई विचित्र समानताएं हैं। जहां श्री रावत को फील्ड में विशेषतः कश्मीर व पूर्वोत्तर में लम्बा अनुभव है, वहीं पाक सेनाध्यक्ष की ज्यादातर पोस्टिंग पीओके में ही रही है। वहां भी सबसे वरिष्ठ अधिकारी को प्रशिक्षण/मुख्यालय पर लम्बे समय तक तैनाती तथा भारत में श्री प्रवीण बख्शी को इसी कारण सेनाध्यक्ष नहीं बनाया गया।

कांग्रेस राष्ट्रहितों के साथ खिलवाड़ में अंध मोदी विरोध के चलते कोई कोताही नहीं बरत रही है। उसे निवर्तमान सेनाध्यक्ष दलबीर सिंह सुहाग के वक्तव्य के बाद अपना रवैया बदलना चाहिए। श्री सुहाग ने भाजपा सरकार द्वारा सेना को फ्रीहैण्ड करने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि सरकार के समर्थन के चलते ही सेना ने वर्ष 2016 में विगत वर्षों की तुलना में कहीं ज्यादा आतंकवादियों को मौत के घाट उतारा है।

मैं श्रीमान् नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार को सेना का मनोबल बढाने के लिए साधुवाद देता हूं। परन्तु उसे यह नहीं भूलना चाहिए कि सीमा पर दो सैनिकों का सिर काटकर पाक सेना द्वारा ले जाने पर उसने हंगामा बरपा किया था, 2014 के चुनाव अभियान की शुरुआत उसने रेवाड़ी में पूर्व सैनिक रैली से की थी।

क्या इसे सेना के नाम पर राजनीति नहीं कहा जा सकता! कांग्रेस आज सेना के नाम पर बार–बार भाजपा सरकार की बजाय नरेन्द्र मोदी को निशाने पर ले रही है, वह भले ही मर्यादा को तार–तार कर देनेवाला हो, कपोल कल्पित तथ्यों पर आधारित हो, प्रश्न यह है कि उसे यह अवसर भाजपा सरकार दे ही क्यों रही है?

कतिपय प्रश्न अनुत्तरित हैं, केन्द्र सरकार की जवाबदेही इन मुद्दों पर बनती है। गलती से सीमा पार चले गए जवान चंदू कहां हैं?उनकी रिहाई कब होगी?न्यायालय द्वारा बार–बार निर्देश देने पर भी पाक जेलों में सड़ रहे 56 युद्धबंदियों की रिहाई के लिए उसने क्या प्रयास किए हैं? सौरभ कालिया व उनके साथियों को तड़पा–तड़पा कर मारने वालों के

शेष पृष्ठ 09 पर....

इस्लामी कट्टरपंथियों व सेक्युलरिस्टों के गठजोड़ का शिकार बने शरणार्थी!

बलबीर पुंज

जम्मू–कश्मीर में मानवीय आधार पर पश्चिमी पाकिस्तान से आए शरणार्थियों को पहचान के लिए प्रमाणपत्र दिए जाने और उसके विरुद्ध प्रदर्शन करने का मामला प्रकाश में आया। पाकिस्तानी सत्ता अधिष्ठान और उसके कुत्सित व विषाक्त चिंतन के पैरोकार अलगाववादियों की विरोधात्मक प्रतिक्रिया इस संबंध में अपेक्षित थी। किंतु इस पर प्रदेश में विपक्षी दलों द्वारा बवाल काटना और सेकुलरिस्टों का मौन धारण करना, कश्मीरियत के नाम पर ढोंग का सटीक नजारा है। क्या जम्मू–कश्मीर में बसे शरणार्थियों को दिए जा रहे प्रमाणपत्र का विरोध केवल इसलिए है, क्योंकि उनमें अधिकतर हिंदू–सिख है?

वर्ष 1947 में जब मजहब के आधार पर भारत का रक्तरंजित विभाजन हुआ, तब पाकिस्तान और उसके कब्जे वाले क्षेत्र से जान बचा कर आए लोगों ने भारत के कई क्षेत्रों में शरण ली। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, पं.बंगाल इत्यादि राज्यों में यह लोग जहां कही भी बसे, आज वहीं के स्थायी निवासी कहलाते हैं। किंतु जम्मू–कश्मीर में इनकी संख्या लाखों में होने के विपरीत स्थिति प्रतिकूल है। पश्चिमी पकिस्तान से आए लोगों के अतिरिक्त गोरखा, वाल्मीकि सहित अन्य समुदाय के लोग भी अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे है।

यह किसी विडंबना से कम नहीं कि 70 वर्ष बाद भी उनकी तीसरी या चौथी पीढ़ी जम्मू–कश्मीर में 'गैर–राज्य विषय' की श्रेणी में है और सभी मौलिक अधिकारों से वंचित है, जबकि प. बंगाल सहित कई सीमावर्ती राज्यों में अवैध रूप से घुसे बांग्लादेशी घुसपैठियों को सभी अधिकार प्राप्त है।

'गैर–राज्य विषय' होने के कारण उक्त शरणार्थी या विस्थापित, सभी भारतीय नागरिक तो हैं, किंतु जम्मू–कश्मीर को धारा–370 के अंतर्गत विशेष राज्य का दर्जा प्राप्त होने के कारण, वह राज्य के मूल–निवासी नहीं हैं। इसी कारण वह प्रदेश के विधानसभा सहित अन्य चुनावों में अपने मत का उपयोग नहीं कर सकते। केवल लोकसभा चुनाव में वोट तो दे सकते हैं। इन लोगों को अपना घर खरीदने का अधिकार नहीं है। इनके बच्चे राज्य सरकार के उच्च शिक्षण संस्थानों और व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों में भी दाखिला नहीं ले सकते। प्रदेश की सरकारी नौकरी के लिए आवेदन नहीं कर सकते।

पचास साल बाद भी नहीं बदला जम्मू-कश्मीर

2011 में हिंदू-मुस्लिम की जनसंख्या में हिस्सेदारी 1961 जैसी

जम्मू–कश्मीर की जनगणना रिपोर्ट में सामने आया है कि पचास साल पहले वहां जिस धर्म का जनसंख्या में जितना अनुपात था उतना ही पचास साल बाद भी रहा। उसमें कोई बढ़त या फिर कमी नहीं हुई।

आंकड़ों के मुताबिक, 1961 में वहां मुसलमानों की जनसंख्या 24.32 लाख थी जिसका राज्य की कुल जनसंख्या में 68.31 प्रतिशत हिस्सा था। वहीं हिंदुओं की जनसंख्या 10.13 लाख थी जो कि कुल जनसंख्या का 28.45 प्रतिशत थी। उस वक्त राज्य की कुल जनसंख्या 35. 60 लाख थी।

लगभग 50 साल बाद 2011 में आई जनगणना रिपोर्ट के मुताबिक जम्मू कश्मीर की कुल जनसंख्या 125.41 लाख हो गई थी। उसमें 85.67 लाख मुस्लिम धर्म के थे यानी कुल जनसंख्या के 68.31 प्रतिशत। जैसे की 1961 में थे। वहीं 2011 में हिंदुओं की जनसंख्या 35. 66 लाख तक पहुंच गई। कुल जनसंख्या का 28.43 प्रतिशत।

अगर पुराने आंकड़ों की बात करें तो 1941 में वहां मुसलमानों की जनसंख्या 72.41 प्रतिशत और हिंदुओं की 25.01 प्रतिशत थी। लेकिन उसके बाद से 1981 तक वहां के मुसलमानों की जनसंख्या में लगातार गिरावट होती गई। 1981 में मुसलमानों का प्रतिशत 64.19: रह गया। तब हिंदुओं का प्रतिशत 32.2 हो गया था। लेकिन 1981 के बाद मुसलमानों की जनसंख्या बढ़नी शुरु हुई और 2001 में प्रतिशत 66. 97 हुआ जो कि 2011 में 68.31 प्रतिशत तक पहुंच गया।

पहले जम्मू कश्मीर में कुल 14 जिले थे। जिसमें से जम्मू और कश्मीर के 6–6 और बाकी 2 लद्दाख में हुआ करते थे। इसमें दस में मुस्लिम जनसंख्या ज्यादा थी। जिसमें छह जिले कश्मीर में थे, 3 जम्मू में और एक लद्दाख। तीन में हिंदू लोगों की संख्या ज्यादा थी और बाकी एक में बौद्ध बहुमत ज्यादा था।

शेष पृष्ठ 07 पर....

सरकार का दावा है, "उन्हें केवल पहचान दस्तावेज दे रहे हैं, जिससे उन्हें भारत सरकार से संबंधित संस्थानों में रोजगार मिल सके।'

हिंदू–सिख शरणार्थियों को प्रमाणपत्र देने का विरोध करने वालों का मुख्य आरोप है कि पीडीपी–भाजपा सरकार के इस कदम से कश्मीर की मुस्लिम बहुल जनसांख्यिकी बिगड़ेगी। यक्ष प्रश्न है कि क्या कश्मीर प्रारंभ से ही मुस्लिम बहुल था?क्या जम्मू–कश्मीर रियासत के अंतिम महाराजा हरि सिंह हिंदू नहीं थे?क्या कश्मीर, कश्यप ऋषि–मुनि की तपोभूमि नहीं है? प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शेख अब्दुल्ला अपनी आत्मकथा 'आतिश–ए–चिनार' में स्वीकार कर चुके है कि न केवल उनके पूर्वज, बल्कि यहां रह रहे सभी लोगों के वंशज हिंदू थे।

मैं पाठकों को भारत की स्वतंत्रता के तीन माह बाद की एक घटना का स्मरण कराना चाहता हूं। अक्टूबर 1947 में जम्मू–कश्मीर रियासत के भारत में विलय होने के एक माह पश्चात् 25 नवंबर को, जब पाकिस्तानी सेना ने कबायलियों के साथ मिलकर मुजफ्फराबाद, मीरपुर, कोटली और भिंबर पर हमला कर दिया था, जिसमें हजारों हिंदू, सिख और मुस्लिम मौत के घाट उतार दिए गए थे। तब इन लोगों को भागकर जम्मू में शरण लेनी पड़ी थी। वर्ष 1931 के भयानक नरसंहार, जिसमें शेख अब्दुल्ला की महती भूमिका थी, उस कांड के पश्चात गैर–मुस्लिमों पर यह दूसरा बड़ा जिहादी हमला था। मुजफ्फराबाद की जनता के लिए सबसे निकट और सुरक्षित शहर श्रीनगर ही था।

किंतु तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. नेहरू द्वारा मनोनीत जम्मू–कश्मीर के 'वजीर–ए–आजम' शेख अब्दुल्ला ने उन्हें घाटी में रुकने की स्वीकृति नहीं दी। शेख का तर्क था कि इनके वहां रहने से 'कश्मीरियत' दुर्बल होगी। अंततोगत्वा, इन शरणार्थियों को जबरन जम्मू की ओर धकेल दिया गया। सबसे शर्मनाक बात यह रही कि भारत की स्वतंत्रता और जम्मू–कश्मीर के विलय होने के बाद भी पं.नेहरू और शेख ने भारत के इस हिस्से पर नियंत्रण जमाने के लिए सुरक्षाबलों को नहीं भेजा।

1947 में पाकिस्तान द्वारा कश्मीर पर मजहबी हमले के समय शेख अब्दुल्ला ने जिस तरह रियासती पुलिस और भारतीय सेना को मुजफ्फराबाद, मीरपुर और गिलगित–बाल्टिस्तान जाने से रोका, उससे उनकी कुटिल मंशा पूरी तरह साफ हो जाती है कि वह इन क्षेत्रों को राज्य में बनाए रखना नहीं चाहते थे। विभाजन से पूर्व हुए चुनाव में आज के 'पीओके' से शेख की पार्टी के सभी प्रत्याशी पराजित हो गए थे। उन्हे डर था कि यदि यह क्षेत्र रियासत में बने रहे तो उससे उनकी राजनीतिक स्वार्थ को गहरा आघात पहुंचेगा।

70 वर्ष के इतिहास की समीक्षा करें तो हम स्पष्ट रुप से पाएंगे कि जम्मू–कश्मीर में 'शेर–ए–कश्मीर' के नाम से विख्यात शेख अब्दुल्ला का एक–एक निर्णय कट्टर इस्लामी दर्शन से जनित था। यही कारण है कि पं.नेहरु के सानिध्य में, जो इस्लामी कट्टरता के बीज शेख ने कश्मीर में बोए, आज हम उसकी विषाक्त फसल को घाटी में लहलाता देख रहे हैं।

हिंदू शरणार्थियों को प्रमाणपत्र देने का विरोध करने वालों को जम्मू–कश्मीर में सैनिक कॉलोनी व पंडित कॉलोनी बनाने पर भी आपत्ति है, किंतु बांग्लादेशी और म्यांमारी मुस्लिमों की बसाहट पर कोई एतराज नहीं है, जो राष्ट्र सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती है। म्यांमार सरकार का मानना है कि रोहिंग्या समुदाय में जिहादी तत्व शामिल है। पिछले कुछ वर्षों से भारत में इस समुदाय की संख्या एकाएक बढ़ी है।

सरकारी आंकड़ों में इनकी संख्या गैर–मुस्लिम बहुल क्षेत्र जम्मू और लद्दाख में 13,400 है। किंतु एक अनुमान के अनुसार, लगभग बीस हजार म्यांमारी मुस्लिम प्रदेश के कई संवेदनशील क्षेत्रों में बसे हुए हैं। जमात–ए–इस्लामी, जोकि जम्मू–कश्मीर को विवादित मानते हुए उसका पाकिस्तान में विलय का समर्थन करता है, वह उन्हें सभी मजहबी सुविधाएं दे रहा है। जम्मू–कश्मीर के अतिरिक्त रोहिंग्या मुस्लिम असम, प.

सुरक्षा के लिए खतरा हैं रोहिंग्या घुसपैठिए : विहिप

जम्मू (भाषा), 5 दिसं.। विश्व हिंदू परिषद का कहना है कि जम्मू–कश्मीर में सुरक्षित पनाह हासिल करने वाले रोहिंग्या घुसपैठिए क्षेत्र की सुरक्षा के लिए खतरा हैं और उन्हें राज्य से बाहर निकाल देना चाहिए। वीएचपी की जम्मू–कश्मीर इकाई के अध्यक्ष लीला करण शर्मा ने नगरोटा, सांबा और अन्य स्थानों पर हुए आतंकवादी हमलों को म्यांमार से आए इन घुसपैठियों से जोड़ने का प्रयास किया।

उन्होंने कहा, स्थानीय सहायता और ठिकानों के बगैर ये हमले संभव नहीं थे। हम जम्मू में उनके रहने का विरोध करते हैं। राज्य सरकार को इन विदेशियों को प्रदेश से बाहर निकाल देना चाहिए। उन्हें सरकारी और निजी जमीनों पर बस्ती बनाने की अनुमति नहीं होनी चाहिए। ये लोगों और सेना की सुरक्षा के लिए खतरा हैं। म्यांमार से आए शरणार्थियों द्वारा बेहद गहरा षड़यंत्र रचा जा रहा है। सरकार की ओर से पिछले साल जारी आंकड़ों के अनुसार उनकी संख्या 5,700 है। अब यह संख्या और बढ़ गई होगी।

उन्होंने दावा किया कि जम्मू–कश्मीर एक संवेदनशील राज्य है, उग्रवाद से पीडित है और कश्मीर घाटी ने हिन्दू परिवारों का जबरन पलायन देखा है, लेकिन रोहिंग्या घुसपैठियों को बस्तियों में बसाया जा रहा है।

"हिंदू शरणार्थियों को प्रमाणपत्र देने का विरोध करने वालों को जम्मू–कश्मीर में सैनिक कॉलोनी व पंडित कॉलोनी बनाने पर भी आपत्ति है, किंतु बांग्लादेशी और म्यांमारी मुस्लिमों की बसाहट पर कोई एतराज नहीं है, जो राष्ट्र सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती है।"

प. पाक से आये शरणार्थी रोएं या हंसें ?

सुरेश डुग्गर

श्रीनगर। सत्तर सालों से जम्मू कश्मीर में बिना नागरिकता के रह रहे लाखों वेस्ट पाकिस्तानी रिफ्यूजी अब अपने आपको ठगा हुआ सा महसूस कर रहे हैं।

आपको यह जानकर हैरानी होगी कि जम्मू– कश्मीर की नागरिकता पाना अमेरिका की नागरिकता से भी मुश्किल है। दूसरे शब्दों में कहें तो अमेरिका में एक निर्धारित अवधि में रहने के बाद आपको नागरिकता मिल जाती है, पर जम्मू– कश्मीर में पिछले 70 सालों से रह रहे इन लाखों रिफ्यूजियों को आज भी नागरिकता नहीं मिली है।

प्रत्येक चुनाव में भाजपा ने इन रिफ्यूजियों के मुद्दे को भुनाया जरूर था। यह भी एक कड़वा सच है कि 70 सालों से जम्मू कश्मीर में रह रहे वेस्ट पाकिस्तानी रिफ्यूजी सिर्फ संसदीय चुनावों में ही मतदान कर सकते हैं और नगर पालिका तथा विधानसभा सीटों के लिए होने वाले मतदान करने से वे वंचित हैं। राज्य सरकार की नौकरियों में भी उन्हें कोई अधिकार नहीं है। स्पष्ट शब्दों में कहें तो राज्य के नागरिकों को मिलने वाली सुविधाएं उनसे दूर रखी गई हैं।

और अब जब भाजपा राज्य में सत्ता में आई तो दो सालों की कोशिशों के बाद भी इन रिफ्यूजियों का कोई मसला हल होता नजर नहीं आया, क्योंकि उन्हें पक्के तौर पर राज्य का नागरिक बनाए जाने का मुद्दा पीडीपी के दबाव के चलते ठंडे बस्ते में डाल दिया गया और उसके स्थान पर उन्हें डोमिसाइल सर्टिफिकेट देने की घोषणा कर दी गई। यह सर्टिफिकेट पाकर भी खुश होने वाले इन रिफ्यूजियों को उस समय झटका लगा जब कांग्रेस और नेकां समेत अन्य राजनीतिक दलों ने हुर्रियत के विरोध का समर्थन कर डाला।

वेस्ट पाकिस्तानी रिफ्यूजी फ्रंट के प्रधान लब्बा राम गांधी समेत इन रिफ्यूजियों के अन्य नेता भी अब अपने आपको ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें जो प्रमाण पत्र दिए जा रहे हैं, **वे केंद्र सरकार के मामलों में ही काम आने वाले हैं, जबकि राज्य के नागरिकों को मिलने वाले अधिकारों से वे तब भी वंचित ही रह जाएंगे।**

यही नहीं भाजपा ने 70 सालों से विस्थापितों के तौर पर रहने वाले इन रिफ्यूजियों के प्रत्येक परिवार को 35 लाख रुपए बतौर मुआवजा दिलवाने की उनकी मांग का समर्थन भी किया, पर जब केंद्र तथा राज्य में वह सत्ता पर बैठी तो यह मुआवजा कम होकर 5 लाख पर आ गया। जबकि कड़वी सच्चाई है कि यह पांच लाख 1947, 1965 या 1971 में आए रिफ्यूजियों के परिवारों को दिया जाना है, न कि आज के समय में 20 हजार परिवारों से 2 लाख बन चुके परिवारों को। (5 जनवरी)

http://hindi.webdunia.com

बंगाल, केरल, आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश और दिल्ली में अवैध रूप से बसे हुए हैं।

हाल ही में जम्मू–कश्मीर के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी धारा–370 और अनुच्छेद–35(ए) का समर्थन करने वालों के मुंह पर किसी तमाचे से कम नहीं है। शीर्ष अदालत ने स्पष्ट किया है कि जम्मू–कश्मीर, भारतीय संविधान के दायरे से बाहर नहीं है और उसे संविधान के बाहर कोई संप्रभुता भी नहीं मिली है। इससे भी देश की अलगाववादी शक्तियां और तथाकथित सेकुलरिस्ट अधिक बौखलाए हुए हैं।

इस्लामी कट्टरपंथियों से सेकुलरिस्टों का गठजोड़ कोई नया नहीं है। प.बंगाल के मालदा के बाद धूलागढ़ में सांप्रदायिक हिंसा, छद्म–पंथनिरपेक्षकों द्वारा कट्टरपंथियों के पोषण को ही रेखांकित करता है। वोटबैंक की खातिर प्रदेश की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इस वर्ष मुहर्रम के समय, दुर्गा–पूजा में प्रतिमाओं के विसर्जन पर आंशिक पाबंदी लगा दी थी, जबकि बीरभूम के एक गांव में कुछ मुस्लिमों की आपत्ति के बाद प्रशासन ने हिंदुओं को दुर्गा–पूजा का आयोजन करने की स्वीकृति नहीं दी। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने इसका कड़ा संज्ञान लिया था।

भारत में आज पंथनिरपेक्षता, कट्टर इस्लामी मानसिकता के पोषण और हिंदू, उसकी संस्कृति व उसकी मान्यताओं के प्रति तिरस्कार के भाव तक सीमित हो गया है। यह किसी विडंबना से कम नहीं कि 1980–90 के दशक में जिहादियों के कारण घाटी से कश्मीरी पंडितों का निर्वासन, हिंदू मान–बिंदु और प्रतीक चिह्नों का अपमान करना, आतंकवादियों के प्रति सहानुभूति रखना और 'भारत के तेरे टुकड़े होंगे....इंशा–अल्लाह..इंशा–अल्लाह' जैसे देशविरोधी नारों का समर्थन, पंथनिरपेक्षकों के लिए सच्चा सेकुलरवाद हैं, जबकि किसी भी व्यक्ति, सरकार और दल द्वारा हिंदुओं के हितों और आत्मसम्मान की रक्षा करना, घोर सांप्रदायिकता का प्रतीक है। (31 दिसंबर, 2016)

लेखक भाजपा के पूर्व सांसद हैं।

पृष्ठ 05 का शेषांश....

लेकिन 2006 में आठ नए जिले बनाए गए जिससे कुल जिलों की संख्या 22 पहुंच गई। उनमें से 17 जिलों में मुसलमानों की जनसंख्या ज्यादा है। जिसमें से 10 कश्मीर में हैं, एक लद्दाख में और छह जम्मू में आते हैं। वहीं हिंदू धर्म के लोग चार जिलों में ज्यादा हैं। वे चारों जम्मू में ही हैं। लेह में बौद्ध धर्म के लोगों का बहुमत है।

कश्मीर में हिंसक प्रदर्शन करते कुछ लोग

– जीशान शेख (जनसत्ता, 30 दिस.)

1984 के दंगों के बाद राजीव ने कश्मीर की तरफ से पूरी तरह से ध्यान हटाकर पंजाब और श्रीलंका में लगा दिया। इंदिरा गांधी के बाद भारत की राह बदल गई।

कश्मीर में सेना की जीत को राजनीतिज्ञों ने हार में बदला

गतांक से आगे.....

नेहरूजी के यूएनओ में चले जाने के कारण युद्धविराम हो गया और भारतीय सेना के हाथ बंध गए जिससे पाकिस्तान द्वारा कब्जा किए गए शेष क्षेत्र को भारतीय सेना प्राप्त करने में फिर कभी सफल न हो सकी। आज कश्मीर में आधे क्षेत्र में नियंत्रण रेखा है तो कुछ क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सीमा। अंतरराष्ट्रीय सीमा से लगातार फायरिंग और घुसपैठ होती रहती है।

इसके बाद पाकिस्तान ने अपने सैन्य बल से 1965 में कश्मीर पर कब्जा करने का प्रयास किया जिसके चलते उसे मुंह की खानी पड़ी। इस युद्ध में पाकिस्तान की हार हुई। हार से तिलमिलाए पाकिस्तान ने भारत के प्रति पूरे देश में नफरत फैलाने का कार्य किया और पाकिस्तान की समूची राजनीति ही कश्मीर पर आधारित हो गई यानी कि सत्ता चाहिए तो कश्मीर को कब्जाने की बात करो।

इंदिरा की गलती

1971 में पाकिस्नान ने फिर से कश्मीर को कब्जाने का प्रयास किया। उसके कब्जे वाले बांग्लादेश में उसने हिन्दुओं के साथ ही आजादी की मांग करने वाले बंगाली मुसलमानों का कत्लेआम करना शुरु कर दिया। इस कत्लेआम के चलते पश्चिम बंगाल में लाखों की तादात में शरणार्थी आने लगे। इससे पश्चिम बंगाल में स्थिति बिगड़ने लगी। तब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने मजबूरन युद्ध करने की ठानी। मुकाबला किया और अंततः पाकिस्तान की सेना के 1 लाख सैनिकों ने भारत की सेना के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया और बांग्लादेश नामक एक स्वतंत्र देश का जन्म हुआ।

इंदिरा गांधी ने यहां एक बड़ी भूल की। यदि वे चाहतीं तो यहां कश्मीर की समस्या हमेशा–हमेशा के लिए सुलझ जाती, लेकिन वे जुल्फिकार अली भुट्टो के बहकावे में आ गईं और 1 लाख सैनिकों को छोड़ दिया गया। इस युद्ध के बाद पाकिस्तान को समझ में आ गई कि कश्मीर हथियाने के लिए आमने–सामने की लड़ाई में भारत को हरा पाना मुश्किल ही होगा। 1971 में शर्मनाक हार के बाद काबुल स्थित पाकिस्तान मिलिट्री अकादमी में सैनिकों को इस हार का बदला लेने की शपथ दिलाई गई और अगले युद्ध की तैयारी को अंजाम दिया जाने लगा लेकिन अफगानिस्तान में हालात बिगड़ने लगे।

फाइल फोटो : ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार

1971 से 1988 तक पाकिस्तान की सेना और कट्टरपंथी अफगानिस्तान में उलझे रहे। यहां पाकिस्तान की सेना ने खुद को गुरिल्ला युद्ध में मजबूत बनाया और युद्ध के विकल्पों के रूप में नए–नए तरीके सीखे। यही तरीके अब भारत पर आजमाए जाने लगे। पहले उसने भारतीय पंजाब में आतंकवाद शुरु करने के लिए पाकिस्तानी पंजाब में सिखों को खालिस्तान का सपना दिखाया और हथियारबद्ध सिखों का एक संगठन खड़ा करने में मदद की। पाकिस्तान के इस खेल में भारत सरकार उलझती गई। स्वर्ण मंदिर में हुए दुर्भाग्यपूर्ण ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार और उसके बदले की कार्रवाई के रूप में 31 अक्टूबर 1984 को श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद भारत की राजनीति बदल गई।

राजीव गांधी द्वारा उपेक्षा

एक शक्तिशाली नेता की जगह एक अनुभवहीन और विचारहीन नेता राजीव गांधी ने जब देश की बागडोर संभाली तो उनके आलोचक कहने लगे थे कि उनके पास कोई योजना नहीं और कोई नीति भी नहीं है। 1984 के दंगों के बाद राजीव ने कश्मीर की तरफ से पूरी तरह से ध्यान हटाकर पंजाब और श्रीलंका में लगा दिया। इंदिरा गांधी के बाद भारत की राह बदल गई।

पंजाब में आतंकवाद के इस नए खेल के चलते पाकिस्तान की नजर एक बार फिर मुस्लिम बहुल भारतीय कश्मीर की ओर टिक गई। उसने पाक अधिकृत कश्मीर में लोगों को आतंक के लिए तैयार करना शुरु किया। अफगानिस्तान का अनुभव यहां काम आने लगा था। तत्कालीन राष्ट्रपति जनरल जिया–उल–हक ने 1988 में भारत के विरुद्ध ऑपरेशन टोपाक नाम से वॉर विद लो इंटेंसिटी की योजना बनाई। **क्रमशः**

भगवान के प्रति भिखारी का ऐसा समर्पण!

यदिरेड्डी कहते हैं, मैं भगवान में विश्वास रखता हूं और सिर्फ उनसे ही मुझे ताकत और साहस मिलता है जिसकी वजह से मैं अब तक जीवित रह सका हूं। शुक्राने के तौर पर जो भी थोड़ा-बहुत मेरे पास है वो मैं श्रीराम को अर्पित कर रहा हूं।

विजयवाड़ा, 27 दिसंबर, 2016। विजयवाड़ा में हर कोई यदिरेड्डी की बात कर रहा है। 75 वर्षीय यदिरेड्डी मंदिर के बाहर भीख मांग कर गुजारा करते हैं। यदिरेड्डी ने मंदिर में भगवान श्रीराम के लिए चांदी का मुकुट दान दिया तो सभी हैरान रह गए। वो भी नोटबंदी के मौजूदा दौर में जब कैश के संकट से हर कोई जूझ रहा है।

मुत्यालमपादम में कोडानंदा रामालायम के लिए यदिरेड्डी की ओर से चांदी का मुकुट देना लोगों के लिए बेशक हैरान करने वाला हो लेकिन मंदिर प्रबंधन के लिए कोई नई बात नहीं है। यदिरेड्डी पहले भी मंदिर में साईबाबा के लिए चांदी का मुकुट दान कर चुके हैं। मंदिर के चेयरमैन और विधायक गौतम रेड्डी के मुताबिक यदिरेड्डी ने दोनों मुकुटों पर डेढ़ लाख रुपये खर्च किए। इसके अलावा वे मंदिर में श्रद्धालुओं को दिए जाने वाले भोजन (नित्य आनंदम्) के लिए भी 20,000 रुपये दे चुके हैं। (आज तक)

जापान की तोशिको को संस्कृत में मिले पांच स्वर्ण

सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक, रामकुंवर बागड़ स्वर्ण पदक, चंद्रबदन सिंह, परमानस स्वर्ण पदक, स्वामीमाधवाचार्य स्वर्ण पदक, अन्नदाप्रसाद मुखर्जी स्वर्ण पदक।

वाराणसी, 27 दिस.। देश की सांस्कृतिक राजधानी काशी में जापान में ओसाका की रहने वाली तोशिको ईदाका ने सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के 34वें दीक्षांत समारोह में रामानुजवेदांताचार्य की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर पांच स्वर्ण पदक हासिल किया।

तोशिको को जैसे ही स्वर्ण पदक प्रदान किया गया, दीक्षांत मंडप तालियों से गूंज उठा। तोशिको आठ साल पहले संस्कृत के अध्ययन के लिए काशी आई थीं। बताया कि काशी आना उनके लिए संयोग है। काशी आने से पहले वह काठमांडू घूमने गईं थीं। वहां कुछ दिन रूकीं और नेपाली भाषा सीखने लगीं।

उस दौरान उन्हें पता चला कि नेपाली भाषा का मूल संस्कृत है। तब उन्होंने संस्कृत सीखने की ठानी। उन्हें बताया गया कि अगर संस्कृत सीखना है तो काशी जाना होगा। काशी में सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में दाखिला लेने की सलाह दी गई। तोशिको 2008 में काशी आईं और संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम में दाखिला लिया।

(हिन्दूस्तान)

पृष्ठ 04 का शेषांश....

विरुद्ध भाजपा सरकार क्या करेगी? न्याय की तलाश में दर-दर भटक रहे, उनके पिता को क्या न्याय मिलेगा?कालिया व उनके साथी करगिल शहीद क्यों नहीं माने जा रहे?सैनिकों को ओ आर ओ पी देने में अड़ंगे ड़ालने वाली, भाजपा सरकार की छीछालेदर कराने वाली अफसरशाही पर नकेल क्यों नहीं लगाई जा रही?निवर्तमान सेनाध्यक्ष के बयान से पता चलता है कि आतंकवादियों का एनकाउण्टर सेना के लिए कितना दुष्कर होता है तो माछिल मुठभेड़ में सजायाफ्ता बनाए गए सैन्यकर्मियों की सजा क्यों नहीं माफ की जा सकती?

सैनिकों को सेवानिवृत्ति के बाद रोजगार देने, सैनिकों को सेवाअविधि के स्थान पर आयु वर्ष के आधार पर सेवानिवृत्ति, सैनिकों को अधिकारियों के नौकर का भी काम करने वाला कानून समाप्त करने तथा अन्य सैनिक कल्याण के लिए समय- समय पर गठित विभिन्न समितियों के प्रतिवेदन कब तक धूल फाँकेंगे? भाजपा सरकार त्वरित कार्रवाई करे तो समीचीन होगा।

कोई माने या न माने परंतु सातवें वेतन आयोग के बाद सैनिक अपने को ठगा सा महसूस कर रहे हैं! भाजपा सरकार के प्रतिरक्षा मंत्री सेना की मारकक्षमता बढ़ाने, उन्हें आवश्यक साजो-सामान उपलब्ध कराने हेतु महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं, मैं उनका अभिनंदन करना चाहूंगा। पाक- चीन के प्रति सैन्य नीति के साथ ही कूटनीति में यदि किलर प्वाइंट हो, निरन्तरता हो तभी बात बन सकती है। परन्तु व्यवहार में देखने में आ रहा है सर्जिकल स्ट्राइक का उपयोग केवल ढोल पीटने तथा कूटनीति/विदेशनीति पाक-चीन के प्रति राष्ट्रीय आवश्यकतानुरूप कहीं भी ठहरती नहीं! क्या भाजपा सरकार आत्मावलोकन करेगी? (7 जन.)

आनन्द ...

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति बनाने की मांग

ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य वासुदेवानंद सरस्वती का कहना है कि हिंदुओं की संख्या घट रही है। हिंदुओं को 'दो बच्चों के नियम को त्यागकर 10 बच्चों के नियम का पालन करें। इसकी चिंता न करें कि उन्हें कौन पालेगा, भगवान आपके बच्चों का ध्यान रखेगा।'

संघ द्वारा प्रोत्साहित तीन दिवसीय धर्म संसति महाकुंभ 'हिंदू बचाओ' के संदेश के साथ रविवार को समाप्त हुआ। यहीं सरस्वती ने यह बयान दिया। इस महाकुंभ में कई ऋषियों ने हिस्सा लिया, जहां हिंदुओं से 10–10 बच्चे पैदा करने का आह्वान किया गया ताकि हिंदुओं की संख्या को बढ़ाया जा सके। दिलचस्प बात यह है कि इसी समय राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की मांग भी उठाई गई।

टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक विश्व हिंदू परिषद के प्रवीण तोगड़िया ने बड़ा दुःख जताते हुए कहा कि गोहत्या पर रोक लगाने पर कानून का रवैया टाल–मटोल वाला है। **संघ प्रमुख श्री मोहन भागवत ने भी इस मामले में तोगड़िया के विचारों के साथ सहमति जताई।** वहीं, ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य वासुदेवानंद सरस्वती ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी

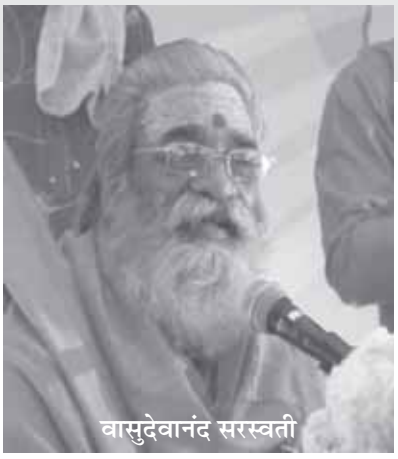
वासुदेवानंद सरस्वती

गोहत्या पर वैसे ही तुरंत फैसला लेने को कहा जैसे नोटबंदी के मामले में लिया गया।

(जनसत्ता, 26 दिसं.)

मिशनरियों से सावधान रहें: श्री भागवत

नवसारी, (गुजरात), 31 दिसंबर। नवसारी जिले के वसदा में भारत सेवाश्रम संघ की ओर से आयोजित विराट हिंदू सम्मेलन में बोलते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक मोहन भागवत ने धर्मांतरण का मुद्दा उठाते हुए कहा कि देश में ऐसी कोशिशें कामयाब होने की संभावना नहीं है क्योंकि मिशनरियों में 'ताकत नहीं है।'

सम्मेलन के समापन संबोधन में श्री भागवत ने कहा, 'अमेरिका, यूरोप में लोगों को ईसाई धर्म में लाने के बाद वे (मिशनरी) एशिया पर नजर गड़ाए हुए हैं। चीन खुद को धर्मनिरपेक्ष कहता है, लेकिन क्या वह खुद को ईसाई धर्म के तहत आने देगा?नहीं. क्या पश्चिम एशियाई देश ऐसा होने देंगे?नहीं. वे अब सोचते हैं कि भारत ही ऐसी जगह है।'

उन्होंने कहा, 'लेकिन अब उन्हें समझ लेना चाहिए कि 300 साल से ज्यादा समय से जोरदार कोशिशें करने के बाद भी सिर्फ छः फीसदी भारतीय आबादी ईसाई बन सकी है, क्योंकि उनमें ताकत नहीं है।'

श्री भागवत ने अपनी बात को सही ठहराने के लिए कहा कि अमेरिका का एक गिरजाघर और ब्रिटेन का एक गिरजाघर क्रमशः गणेश मंदिर और विश्व हिंदू परिषद के कार्यालय में बदल दिया गया। अमेरिका के एक हिंदू व्यापारी ने यह काम किया।

उन्होंने कहा, 'उनके अपने देशों में (मिशनरियों की) यह हालत है और वे हमें बदलना चाहते हैं। वे ऐसा नहीं कर सकते, उनमें इतनी ताकत नहीं है।'

श्री भागवत ने हिंदुओं से यह याद रखने को कहा कि 'वे कौन हैं' और उनकी संस्कृति 'ऊंची' है। 'हिंदू समुदाय मुश्किल में है. हम किस देश में रह रहे हैं?अपने ही देश में? यह हमारी भूमि है, (उत्तर में) हिमालय से लेकर (दक्षिण में) सागर तक. यह हमारे पूर्वजों की भूमि है। भारत माता हम सब की मां है।'

संघ प्रमुख ने कहा, 'हम खुद को भूल चुके हैं. हम सब हिंदू हैं। हमारी जातियां, जो भाषाएं हम बोलते हैं, हम जिस क्षेत्र से हैं, हम जिसे पूजते हैं, वे अलग–अलग रहने दें. जो भारत माता के पुत्र हैं, वे हिंदू हैं, इसलिए भारत को हिंदुस्तान कहा जाता है।'

https://makingindiaonline.in

पोप, वेटिकन और ईसाई जगत के सामने 'भारतीय ईसाइयों' की कोई कीमत नहीं ?

खूंखार आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट (ISIS) द्वारा मार्च में यमन में अगवा किए गए केरल के फादर टॉम उझुन्नैल ने एक वीडियो द्वारा ईसाइयों के सर्वोच्च गुरु पोप फ्रांसिस और भारत सरकार से उनकी रिहाई के लिए एक भावुक अपील की है।

क्रिसमस से एक दिन बाद आए एक वीडियो संदेश में बेहद घबराए हुए नजर आ रहे फादर टॉम ने कहा है कि आतंकवादियों से उनकी जान बचाई जाए. उन्होंने कहा कि, वे भारतीय हैं। इसलिए ईसाई संसार उनको नजरअंदाज कर रहा है। यदि वह यूरोपीय होते तो उनके मामले को गंभीरता से लिया जाता। फादर टॉम ने कहा है कि, प्रिय फादर पोप फ्रांसिस एक पिता की तरह मेरे जीवन की रक्षा कीजिए। मैं हताश हूं और मेरा स्वास्थ्य गिर रहा है। फादर टॉम को यमन के एडन शहर से इस्लामिक स्टेट के आतंकियों ने अगवा कर लिया था। हालांकि सीरिया और यमन में काम कर रहे ISIS विशेषज्ञों से फिलहाल इस वीडियो की प्रामाणिकता की पुष्टि होनी बाकी है। (27 दिसंबर)

http://hindi-revoltpress-com

इस्लाम ने वेश्यावृत्ति (हलाला) में ढकेला; हिन्दू ने सम्मान सहित अपनाया

हलाला से बचने के लिए दुष्कर्म पीड़िता फरार

गाजियाबाद। मुरादनगर की एक कॉलोनी में फैक्ट्री मालिक द्वारा युवती के साथ जबरन निकाह कर दुष्कर्म करने के मामले में नया मोड़ आ गया है। आरोपी द्वारा तलाक देने के बाद अब परिजन युवती का निकाह दोबारा दुष्कर्म के आरोपी के साथ ही करना चाहते हैं। परिजन आरोपी से निकाह करने के लिए युवती पर हलाला करने का दबाव बना रहे थे। हलाला के डर से दुष्कर्म पीड़िता घर फरार हो गई। युवती के परिजनों ने मामले की शिकायत थाने में की है।

एक माह पूर्व दिल्ली निवासी बैट्री की प्लेट गलाने की फैक्ट्री के मालिक नौशाद ने शहर की एक कालोनी निवासी युवती के साथ गाजियाबाद की एक मस्जिद में जबरन निकाह कर लिया था। इसके बाद व्यवसायी ने युवती को कोल्डड्रिंक में नशीला पदार्थ पिलाकर उसके साथ दुष्कर्म किया एवं मुरादनगर बस अड्डे पर छोड़ गया। पीड़िता ने किसी तरह घर पहुंचकर आप बीती परिजनों को सुनाई। घटना से गुस्साये परिजनों ने आरोपी नौशाद के खिलाफ थाने में तहरीर दी थी।

क्या है हलाला?

पति द्वारा तलाक देने पर महिला को पर्दे में रहकर इद्दत करनी होती है। यदि महिला अपने पति से दोबारा निकाह करना चाहती है तो इसके लिए उसे पहले दूसरे पुरूष से निकाह करना होगा। यह पुरुष महिला के साथ शारीरिक संबंध बनाएगा एवं उसको तलाक देगा। इसके बाद महिला पर्दे में रहकर इद्दत करके दोबारा अपने पति के साथ निकाह कर सकती है।

पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर नौशाद को गिरफ्तार कर लिया था तथा उसे जेल भेज दिया था।

आरोपी के जेल जाने पर परिजन युवती का निकाह किसी दूसरे युवक के साथ कराना चाहते थे, लेकिन आरोपी द्वारा तलाक देने पर ही पीड़िता किसी दूसरे युवक से निकाह कर सकती थी। आरोपी द्वारा बिना तलाक दिए युवती का निकाह किसी दूसरे युवक से नहीं होने पर परिजन चिंतित हो गए। लिहाजा परिजनों ने दुष्कर्म के आरोपी से तलाक देने का समझौता कर लिया। इसकी एवज में आरोपी ने युवती के परिजनों से दुष्कर्म के केस को खत्म कराने की शर्त रखी। इस शर्त को लेकर दोनों पक्षों में सहमति बन गई जिसके बाद आरोपी ने पिछले दिनों पीड़िता को तलाक दे दिया।

लेकिन दुष्कर्म की घटना के चलते अन्य युवकों ने युवती के साथ निकाह करने से इनकार कर दिया। मजबूरन परिजनों ने युवती का निकाह दोबारा नौशाद के साथ ही करने का निर्णय लिया। युवती हलाला करने के बाद ही नौशाद से निकाह कर सकती थी।

परिजन पीड़ित युवती पर हलाला करने का दबाव बना रहे। युवती इसका विरोध कर रही थी। हलाला के डर से युवती दो जनवरी को अपने घर से फरार हो गई। परिजनों द्वारा काफी तलाश करने के बाद भी पीड़िता का कहीं सुराग नहीं लगा। बृहस्पतिवार को युवती के परिजनों ने इसकी शिकायत थाने में की। इस बारे में एएसपी आशीष श्रीवास्तव ने बताया कि मामले की जांच कर कार्रवाई की जाएगी। (जागरण, 6 जनवरी)

– हसीन शाह

डंके की चोट पर मुस्लिम महिला ने अपनाया हिंदू धर्म

गाजियाबाद, (नवभारत टाइम्स, 31 दिसंबर, 2016)। काफी जद्दोजहद के बाद शुक्रवार देर शाम जय शिवसेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित आर्यन के नेतृत्व में मुस्लिम महिला शबनम ने हिंदू धर्म अपना लिया। आर्य समाज के विद्वान शास्त्री ने वैदिक रीति से धर्म परिवर्तन कराया। अब वह सीमा बन गई है। महिला के मुताबिक, वह जय शिवसेना के साथ मिलकर तीन तलाक व मुस्लिम धर्म में व्याप्त अन्य कुरीतियों से पीडित महिलाओं की मदद के लिए लड़ाई लड़ेगी। इसी वजह से उसने धर्म परिवर्तन कराया है।

मालूम हो कि कैला भट्टा में रहने वाली इस महिला को 2014 में उसके पति ने तलाक दे दिया था। ऐसे में इद्दत की अवधि के बाद उसने पति का घर छोड़ दिया था। उस वक्त महिला के 2 बच्चे थे। पीडिता का आरोप है कि उसके पति ने गुमराह करके उसे वापस बुला लिया। वहीं, हलाला की आड़ में महिला से वेश्यावृत्ति कराई गई।

सुभाषित

सत्यवादी लभेतायुः अनायासमथार्जवम्।
अक्रोधनोऽनसूयश्च निवृत्तिं लभते पराम्।।

जो व्यक्ति सदा सत्य बोलता है, सदा विनम्र, सरल स्वभाव रहता है, वह दीर्घायु होता है। जो न किसी पर क्रोध करता है और न किसी से ईर्ष्या करता है। वह इस लोक में सुखी और परलोक में भी परमानन्द को प्राप्त करता है।

क्या संसद राजनीतिक दलों के हाथों बंधक बन गई है?

शंकर शरण

संसद की पूरी कार्रवाई, निर्णय और उस के खर्च का सारा हिसाब, आदि आप देख सकते हैं; मगर राजनीतिक दलों का नहीं। इस का क्या तर्क है, इस के क्या परिणाम हुए हैं? आज जिस तरह संसद दलीय–स्वार्थों के सामने असहाय होकर रह गई है, उससे रोग की जड़ पहचानें। तभी समाधान भी दिखेगा। संविधान के अनुसार संसद सर्वोच्च है, किन्तु व्यवहार में यह पद राजनीतिक दलों ने हथिया लिया है। इसीलिए संसद ही नहीं, राष्ट्रीय, सामाजिक हित भी बहुत पीछे हो गए हैं। इसे सुधारना अब आर्थिक, वैदेशिक, सुरक्षा संबधी मामलों से भी अधिक प्राथमिक महत्व का कार्य है।

जरूरी से जरूरी काम दलबंदी का शिकार होकर पड़े रह जाते हैं। क्योंकि राजनीतिक दल संसद से भी ऊपर हो गए हैं। उन के द्वारा चंदे का हिसाब देने तथा सूचना का अधिकार, आदि से मुक्त रहना भी उसी का सूचक है। उन्होंने एक विशेषाधिकारी स्थिति प्राप्त कर ली है। इसीलिए हर तरह के गलत लोग और घोटालेबाज राजनीतिक दलों में आते हैं। इस से बड़ा मजाक और क्या कि जहाँ मामूली गबन के लिए किसी कर्मचारी की नौकरी चली जाए, वहीं करोड़ों के घोटाले करने वाले अपराधी स्वयं कानून बनाने वाली सर्वोच्च संस्था के सदस्य बने रह सकते हैं। निस्संदेह, हमारा संविधान इस भावना से नहीं बना था।

संविधान का यह भीतरघात एकाएक नहीं हुआ। संविधान में तो राजनीतिक दलों का उल्लेख तक नहीं था। उस ने राजनीतिक प्रक्रिया में वैयक्तिक उत्तरदायित्व को स्थान दिया था, किसी दल को नहीं। अतः संसद में पार्टी–बाजी और पार्टी–निर्देश से चलने की बाध्यता ही मूलतः असंवैधानिक है! 52वें संशोधन द्वारा बना दल–बदल कानून (1985) संविधान की भावना के प्रतिकूल है। उसी ने सांसदों, विधायकों को संसद, विधान सभा में भी पार्टी–निर्देश पर चलना बाध्यकारी बनाया। यह संविधान का ही तख्तापलट था, जिसे पलटे बिना संसद की दुर्गति ठीक होने वाली नहीं!

राजनीतिक दल एक स्वैच्छिक, गैर–सरकारी, संसद से

बाहर का संगठन है। मगर इसी को उस कानून ने संसद के कार्यचालन में वीटो–सा अधिकार दे दिया! कोई सांसद अपने दलीय आदेश के अनुरूप सदन में मतदान न करे, या दल–त्याग कर दे, तो उसे संसद की सदस्यता से हाथ धोना पड़ेगा। यह तर्कहीन होने के साथ–साथ राजनीतिक दलों को अनुचित विशेषाधिकार देना हुआ। कोई सांसद दलीय निर्देश पर नहीं चला, तो उसे दल से हटाएं, मगर संसद से क्यों?

तब तो संसद सदस्य और जनता द्वारा प्रत्यक्ष निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में जिम्मेदारी की हैसियत दलीय संबद्धता से नीची हुई। यह राजनीतिक दल को संसद से भी ऊपर का दर्जा दे देता है। संसद में देश–हिताय निर्णय लेने में यह गंभीर अड़ंगा है। इसी कारण संसद असहाय हो रही है।

जब सांसदों को सदन में अपने विचार या कार्य के लिए दलीय बाध्यता से मुक्त किया जाएगा तभी उन में राष्ट्रीय जिम्मेदारी की भावना खुल कर सामने हो सकेगी। अभी वे स्कूली बच्चों की तरह बना दिए गए हैं। पार्टी–कमान जो कहेगा, वही करना है। तब सोचना–विचारना किसलिए! संसदीय कार्यवाही में दलीय विशेषाधिकार से सांसदों को सोचने–विचारने की स्वतंत्रता ही नहीं रह गई है। **क्या यही संविधान की भावना थी?** सभी सांसदों को पार्टी–स्वार्थ से ऊपर उठकर इस पर सोचना चाहिए।

यदि दल–बदल बढ़ने की आशंका हो, तब भी संसद में दलीय–विशेषाधिकार उचित नहीं। क्योंकि वह दलों की अंदरूनी समस्या है, जिस के लिए संसद को बंधक बनाना गलत है। फिर, यह मानना भी उचित नहीं कि सभी सांसद बिकाऊ होंगे। उस तर्क से तो सभी सरकारी अफसरों को भी दलीय निर्देश से चलाना होगा। आखिर वे तो फाइलों पर स्व–विवेक से ही निर्णय लेते हैं! फिर यह भी सोचें कि यदि अदद सांसद बिकाऊ होंगे, तो उन के दलीय प्रमुख क्यों नहीं?वैसे भी, किसी सांसद को खरीदने वाले भी तो सदन में ही दूसरे किसी दल के नेता ही होते हैं।

संविधान में तो राजनीतिक दलों का उल्लेख तक नहीं था। उस ने राजनीतिक प्रक्रिया में वैयक्तिक उत्तरदायित्व को स्थान दिया था; किसी दल को नहीं।

अतः हर हाल में दल–बदल कानून की उस धारा में कोई तर्क नहीं जो सांसद को किसी पार्टी–निर्देश से चलने के लिए बाध्य करती है। इस का सीधा अर्थ है कि काम करने की ष्टि से एक सांसद संसद में उतना भी स्वतंत्र नहीं, जितना एक मामूली अफसर। यह निश्चय ही विचित्र स्थिति है। ऐसा यूरोप या अमेरिका में भी नहीं है।

सिद्धांततः सांसद– विधायक जनता के समक्ष उत्तरदायी हैं। किन्तु वस्तुतः अपने पार्टी आदेशों के बंदी हैं। अतः इस गड़बड़ी को समाप्त करने तथा राजनीतिक तंत्र को पटरी पर लाने के लिए राजनीतिक दलों के विशेषाधिकार खत्म करना जरूरी है। वैसे भी जनमत की अभिव्यक्ति, राजनीतिक शिक्षण, सत्ता की आलोचना, नीति–निर्माण को सहायता, आदि के लिए राजनीतिक दलों की जो जरूरत थी, वह अब बहुत कम हो गई है।

विविध, व्यापक मीडिया तथा स्वतंत्र न्यायपालिका के कारण वे सब काम अब अधिक प्रभावी ढंग से स्वतः हो सकते हैं। अतः राजनीतिक दलों की भूमिका सीमित की जा सकती है। इस से निर्वाचित व्यक्ति की जिम्मेदारी बढ़ेगी। यह गतिशील और स्वस्थ राज्य–व्यवस्था के लिए बेहतर होगा। संविधान में यही भावना थी, जिसे पुनर्जीवित किया जाना चाहिए।

स्वयं राजनीतिक दलों के नेता, कार्यकर्ता भी केवल सत्ता निकायों में पहुँचने भर केंद्रित रहते हैं। तब उसी को औपचारिक रूप क्यों न दे दिया जाए? 'जन आंदोलन', 'जन संगठन' आदि का ढकोसला तथा हानिकारक जोड़–तोड़–फोड़ छोड़ देना ही अच्छा है। अभी दलीय चिन्ता उन के नेताओं को तरह–तरह के पाखंड के लिए मजबूर करती है। जबकि सचाई यही है कि सभी राजनीतिक कार्यकर्ता अपने को किसी सत्ता–निकाय में देखना चाहते हैं। मगर

वैसे भी जनमत की अभिव्यक्ति, राजनीतिक शिक्षण, सत्ता की आलोचना, नीति–निर्माण को सहायता, आदि के लिए राजनीतिक दलों की जो जरूरत थी, वह अब बहुत कम हो गई है।

केवल इसी के लिए काम के बजाए, झूठे या हानिकारक नारों, विचारों को फैलाने, दुहराने के लिए बाध्य किए जाते हैं।

'सेक्यूलरवाद', 'सामाजिक न्याय', 'दलितवाद', आदि के तहत होते विविध आयोजन दलीय स्वार्थ में होते हैं। अधिकांश कार्यकर्ताओं को इन नारों में वैसी दिलचस्पी नहीं रहती, क्योंकि उन की महत्वाकांक्षा कुछ और है। मगर सीधे उसी के लिए सामाजिक काम करने के बजाए उसे अपने दल का वोट–बैंक बनाने, और दूसरों के बिगाड़ने के प्रपंचों में शामिल होना पड़ता है। यह अनावश्यक और देश के लिए हानिकारक भी रहा है।

व्यवहार भी पुष्टि करता है कि लोग दलों से अधिक व्यक्ति को महत्व देते हैं। मोदी, सोनिया, शरद पवार, जयललिता, लालू, मुलायम, आदि कई नेताओं का प्रभाव उन की दलीय प्रतिबद्धता से नहीं जुड़ा है। यानी दलों से अधिक वह व्यक्ति महत्वपूर्ण है, जिसे लोग चुनते या खारिज करते हैं। इसी को औपचारिक रूप दे देने से हमारी संसद में पुनः जान आएगी, और वहाँ सचमुच राष्ट्रीय विमर्श तथा कार्य हो सकेंगे।

अतः संसद, विधान सभा और राजकीय निकायों के कार्य को वैयक्तिक योग्यता और उत्तरदायित्व पर आधारित रूप देना ही अधिक श्रेयस्कर है। तभी राष्ट्रीय हित के मामलों में संसद में दलबंदी कम होगी और सही काम होगा। दलीय नियंत्रण की वर्तमान व्यवस्था गलत प्रवृत्तियों, उत्तरदायित्वहीनता और गलत लोगों को बढ़ावा देती है। क्या इन बिन्दुओं पर विचार नहीं होना चाहिए?

लेखक सुप्रसिद्ध स्तंभकार हैं

(29 दिसंबर, 2016)

हिन्दू सुरक्षा के लिए 'जटायु सूत्र' पर चलेगी विहिप

विश्व हिन्दू परिषद की केन्द्रीय प्रन्यासी मंडल व प्रबंध समिति की तीन दिवसीय बैठक २९–३१ दिसंबर को नागपुर के माँ उमिया धाम आश्रम में संपन्न हुई। बैठक में जहां देश भर से लगभग २५० वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भाग लिया वहीं भारत के बाहर के एक दर्जन से अधिक विदेशी प्रतिनिधियों ने भी सहभागिता की। बैठक में जहां छुआछूत–उन्मूलन, हिन्दू सुरक्षा, धर्मांतरण, गौ रक्षा, शिक्षा, संस्कृत उत्थान, मठ–मंदिर, सामाजिक समरसता, सेवा कार्य, श्रीराम जन्मभूमि तथा विदेशों में हिन्दू समाज जैसे अनेक विषयों पर गंभीर मंथन हुआ वहीं, समान नागरिक संहिता की मांग करते हुए एक प्रस्ताव भी पारित हुआ।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए पूज्य संत गोविन्द देव गिरि जी ने कहा कि विश्व हिन्दू परिषद जिसकी स्थापना परम पूज्यनीय श्री गुरुजी ने "धर्मो रक्षति रक्षितः" के मन्त्र द्वारा एक विशेष कार्य की अपेक्षा के साथ की और माननीय श्री अशोक सिंहल जैसे महापुरुषों के चिंतन ने इसको गति प्रदान की, आज सम्पूर्ण विश्व में यह धर्म का सबसे बड़ा आशा स्थल बन गया है। हिन्दू धर्म की सुरक्षा, समृद्धि व संगठन के माध्यम से ही विश्व का कल्याण संभव है। गौ, गंगा, गीता, वेद, उपनिषद्, यमुना, सेवा, सुरक्षा व संस्कारों के संवर्धन के साथ समाज के हर वर्ग को साथ लेकर चलने की आज महती आवश्यकता है।

विहिप कार्याध्यक्ष डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया ने कहा कि १७ करोड़ हिन्दू आज भूखा सोता है, २० करोड़ निरक्षरता से पीड़ित है, हिन्दू न गाँव में सुरक्षित है, न शहर में, ४५० से अधिक वर्षों के सतत् संघर्ष के बावजूद भगवान श्रीराम की जन्मभूमि पर मंदिर को भव्यता नहीं दी जा सकी। हालांकि देश के ५३ हजार गाँवों में २० लाख से अधिक बच्चों को बिना किसी सरकारी सहयोग के हमने शिक्षा दी है, १५० से अधिक छात्रावासों के अलावा हजारों अन्य सेवा प्रकल्प चल रहे हैं, गौ मूत्र का पेटेंट हमने कराया है किन्तु अभी बहुत दूर तक जाना बाकी है।

हिन्दुओं की सुरक्षा के लिए 'जटायु सूत्र' पर चलते हुए हम जटायु की तरह लड़ेंगे और हिन्दू सुरक्षा के लिए वृहद् कार्य योजना तैयार करेंगे। मंदिर का निर्माण १९८९ के धर्म संसद में पारित प्रारूप के अनुसार राम जन्मभूमि न्यास द्वारा उसी संकल्प के साथ होगा जिसमें "मंदिर वहीं, अयोध्या की सांस्कृतिक सीमा में मस्जिद नहीं, बाबरी देश में कहीं नहीं " का नारा दिया गया था। हम भगवान श्री कृष्ण की तरह सबको समझा बुझाकर संसदीय कानून के माध्यम से मंदिर को भव्यता प्रदान करेंगे। गाय के साथ कृषि की रक्षा होगी, हिन्दू समाज की आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु हम जीयेंगे और मरेंगे। समाज व उसके निष्ठा केन्द्रों पर होने वाले किसी भी हमले पर विहिप का एक भी कार्यकर्ता मौन नहीं रहेगा!

बैठक में अमेरिका, हॉलैंड, ऑस्ट्रेलिया, हॉगकौंग, मलेशिया, थाईलैंड, इटली, न्यूजीलैंड, कनाडा, बांग्लादेश, नेपाल व कैरीबियन सहित विश्व के अनेक देशों के प्रतिनिधियों व संतों ने अपने–अपने देशों में हिन्दू समाज की स्थिति और संगठन द्वारा चलाए जा रहे विविध कार्यों का संक्षिप्त वृत्त प्रस्तुत किया। विहिप के विविध आयामों तथा अनेक प्रान्तों ने अपने–अपने क्षेत्रों की समस्या व कार्यों पर प्रकाश डाला।

पूज्य संत जितेन्द्रनाथ जी व पूज्य स्वामी शुभधेन्द्र जी के साथ परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष राघव रेड्डी, कार्याध्यक्ष (विदेश) अशोक चौगुले, महामंत्री चम्पत राय, संगठन महामंत्री दिनेश चन्द्र सहित अनेक गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे।

केन्द्रीय सह–संगठन महामंत्री विनायकराव देशपांडे ने कहा कि ६७३२ प्रखंड समितियों व लगभग ७१ हजार कुल समितियों के माध्यम से हम अपने कार्य को आगे आने वाले समय में और गति देंगे। 2017 में 5 जनवरी को गुरु

गोविन्द सिंह जी की ३५०वीं जयंती तथा माघ पूर्णिमा यानि 10 फरवरी को संत रविदास जयंती के साथ बौद्ध पूर्णिमा यानि 10 मई को महात्मा बुद्ध जयंती को परिषद हर स्तर पर मनाएगी।

प्रस्तुति : विनोद बंसल (नागपुर से)

पारित प्रस्ताव

समान नागरिक संहिता

दुनिया के अधिकांश देशों में समान नागरिक कानून लागू हैं, इनमें अनेक इस्लामिक देश भी शामिल हैं। विश्व हिन्दू परिषद् के प्रन्यासी मण्डल व प्रबंध समिति का यह स्पष्ट अभिमत है कि समान नागरिक संहिता लागू करना भारत की अखण्डता, सार्वभौमिकता व साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए परम आवश्यक है। भारत के संविधान निर्माताओं ने 'एक राष्ट्र एक कानून'' की बात की थी। परन्तु अभी तक इसे लागू न कर पाना संविधान,न्याय पालिका और मानवीय जीवन मूल्यों का अपमान तो है ही, साथ ही, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे संविधान निर्माताओं की मूल भावना का भी निरादर है।

समान नागरिक संहिता की बात तो दूर, तुष्टिकरण की नीति के चलते कथित पंथ निरपेक्ष सरकारों ने भारतीय दंड संहिता को भी समान नहीं रहने दिया। शाहबानो मामले में भारतीय दण्ड संहिता की धारा 125 के तहत जो निर्णय हुआ उसे भी संसद के एक कानून द्वारा निरस्त कर भारतीय महिलाओं के एक वर्ग को इनके अधिकारों से वंचित कर दिया गया। जब भी न्याय पालिका या किसी पीड़ित मुस्लिम महिला की ओर से समान नागरिक संहिता कानून बनाने की बात की जाती है तभी, कुछ लोग कुतर्क देकर इस आवाज को दबाने का षड़यंत्र करते हैं।

कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि भारत में बहुलतावादी संस्कृति है। सब को अपने धर्मों को मानने का अधिकार है। वहीं, कुछ लोग कहते हैं कि मुस्लिम समाज की सहमति के बिना ये नहीं होना चाहिए। मुस्लिम समाज का एक वर्ग इसको शरीयत में सीधे सीधे हस्तक्षेप मानता है।

नवीन दायित्व घोषणा

क्र.	नाम	वर्तमान दायित्व	आगामी दायित्व
01.	मिलिन्द पराण्डे	केन्द्रीय मंत्री	संयुक्त महामंत्री, केन्द्र पटना
02.	ब्रजकिशोर भार्गव	प्रांत संगठन मंत्री म0भारत	प्रांत संगठन मंत्री मालवा
03.	राजेश पाण्डेय	रा0संयोजक बजरंग दल	सदस्य केन्द्रीय टोली गोरक्षा
04.	मनोज वर्मा	रा0सहसंयोजक ब0दल	रा0संयोजक बजरंग दल
05.	सोहन सोलंकी	प्रांत संगठन मंत्री मालवा	रा0सहसंयोजक ब0दल
06.	केशव राजू	प्रांत संगठन मंत्री तेलगांना	प्रांतीय संगठन मंत्री झारखण्ड
07.	गोपाल झुनझुनवाला कोलकाता		केन्द्रीय कोषाध्यक्ष
08.	मनोज साहू	ब0दल संयोजक गुवाहाटी एवं कोलकाता क्षेत्र, केन्द्र गुवाहाटी	ब0दल संयोजक गुवाहाटी एवं कोलकाता क्षेत्र, केन्द्र कोलकाता
09.	रामकृष्ण श्रीवास्तव		मेरठ क्षेत्र संयोजक सत्संग एवं धर्माचार्य संपर्क
10.	जवाहर झा	प्रांत संगठन मंत्री उ.बिहार	धर्मप्रसार सह संयोजक पटना क्षेत्र
11.	भोलाशंकर जी	कोषाध्यक्ष उ0बिहार	समन्वय मंच संयोजक पटना क्षेत्र
12.	वचन सिंह जी	सहमंत्री इन्द्रप्रस्थ विहिप	मंत्री इन्द्रप्रस्थ विहिप
13.	भंवर जी चौधरी	मंत्री जोधपुर प्रांत	कार्याध्यक्ष जोधपुर प्रांत
14.	कन्हैया जी	सहमंत्री जोधपुर प्रांत	मंत्री जोधपुर प्रांत
15.	भवानी मल माथुर	कार्याध्यक्ष जोधपुर प्रांत	संरक्षक जोधपुर प्रांत
16.	अनिल जी	प्रांत संगठन मंत्री दिल्ली	निजी कारणों से घर वापस
17.	राजू भाई ठाकर	उपाध्यक्ष उ0गुजरात	कार्याध्यक्ष उ0 गुजरात
18.	सुभाष सैनी		कार्याध्यक्ष जयपुर प्रांत
19.	अजय मन्हास	हिन्दू हेल्प लाईन	प्रांत सहमंत्री ज0कश्मीर
20.	अभिषेक गुप्ता		सह कोषाध्यक्ष जम्मू कश्मीर प्रांत
21.	प्रेमशंकर जी	प्रांत सह संगठन मंत्री ज.क.	संगठन मंत्री ज0कश्मीर
22.	भोलेन्द्र जी	प्रांत सह संगठन मंत्री अवध	संगठन मंत्री अवध
23.	मुकेश जी	प्रांत सह संगठन मंत्री काशी	संगठन मंत्री काशी
24.	ललित पारधी, बालाघाट		क्षेत्र संयोजक बजरंग दल भोपाल क्षेत्र
25.	हुकुमचंद सांवला	केन्द्रीय उपाध्यक्ष	केन्द्रीय उपाध्यक्ष तथा भोपाल गुजरात, राजस्थान क्षेत्र में समन्वय मंच हेतु समन्वयक
26.	जगन्नाथ साही	केन्द्रीय उपाध्यक्ष	केन्द्रीय उपाध्यक्ष तथा समन्वय विभाग के प्रमुख साथ ही इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र, मेरठ एवं लखनऊ क्षेत्र के समन्वयक
27.	विनायकराव देशपाण्डे	सह संगठन महामंत्री केन्द्र जयपुर	सह संगठन महामंत्री केन्द्र भोपाल

विश्व हिन्दू परिषद् का प्रन्यासी मण्डल व प्रबंध समिति इन तीनों ही कुतर्कों का पुरजोर खण्डन करती है। इनको समझना चाहिए कि रीति रिवाज ''धर्म'' नहीं होते। कुछ कुरीतियों को बदलने का मतलब धर्म में हस्तक्षेप नहीं होता। भारत में जितने भी कानून बनते हैं, वे कभी भी सम्बन्धित समाज के जनमत संग्रह के द्वारा नहीं बनते हैं। अपितु, देश और समाज की आवश्यकता

विदर्भ प्रांत द्वारा लगाईं गई एक प्रदर्शनी का अनावरण डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया ने किया।

के अनुसार बनते हैं। किसी भी कुरीति का यह कहकर समर्थन नहीं किया जा सकता कि वह किसी के धर्म ग्रंथों में दी गई है।

यह देश का दुर्भाग्य है कि बहुलता का तर्क देने वाले केवल मुस्लिम समाज का विषय आने पर ही यह तर्क देते हैं। जबकि, हिन्दू समाज की किसी कथित परम्परा में संविधान या न्याय पालिका के द्वारा परिवर्तन किया गया, तब इनका बहुलता का तर्क कहीं खो जाता है।

भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्वों के अंतर्गत अनुच्छेद– 44 में भी सभी के लिए निजी कानून एक जैसे हों, इस हेतु सरकार को सम्पूर्ण देश में समान नागरिक कानून के लिए निर्देश दिया गया हैं। मई 1995 में भी माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने महिलाओं पर अत्याचार रोकने तथा राष्ट्रीय एकता हेतु इसे अनिवार्य रूप से लागू करने पर जोर देते हुए कहा था कि किसी समुदाय में इस तरह के निजी कानून स्वतंत्रता नहीं बल्कि अत्याचार के प्रतीक हैं।

समान नागरिक संहिता के अभाव में जिहादियों की पृथकतावादी वृत्ति को प्रोत्साहन मिलता है। उनको अपने जिहादी एजेण्डे को लागू करने के लिये किसी भी बाधा की चिंता नहीं रहती। इसी कारण उनकी जनसंख्या वृद्धि विस्फोटक सीमा तक पहुंच चुकी है। भारत के जिन स्थानों में जनसंख्या संतुलन बिगड़ा है वहां हिन्दू समाज का अस्तित्व खतरे में पड़ रहा है। असम, प0 बंगाल, बिहार, केरल, कश्मीर तथा उत्तर प्रदेश आदि के कई जिलों में केवल हिन्दू समाज ही नहीं, प्रशासन भी लाचार होता जा रहा है। केवल समान नागरिक संहिता ही जनसंख्या असंतुलन और जनसंख्या विस्फोट को रोक सकती है।

भारतीय संविधान समतावादी संविधान है यहां किसी भी समुदाय के साथ भेदभाव नहीं किया जाता, एक पंथ निरपेक्ष राष्ट्र होने के कारण से यहां साम्प्रदायिक आधार पर भेदभाव का प्रश्न ही पैदा नहीं होता सबको समान दर्जे के नागरिक के रूप में भारत का संविधान स्वीकार करता है। **इसलिए एक मुस्लिम चिन्तक हमीद दलवई ने कहा था ''जो भारत में समान नागरिक कानून स्वीकार नहीं करते, उन्हें दूसरे दर्जे की नागरिकता के लिए तैयार रहना चाहिए''।**

हाल में ही, मा. सर्वोच्च न्यायालय वा इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने मुस्लिम महिलाओं के तीन तलाक, वहु विवाह, भरण पोषण से मनाही और हलाला जैसी बर्बर परम्पराओं पर सम्बन्धित पक्षों से जब राय ली तो मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और 'सेक्यूलर' नेताओं ने मा. न्यायालय की कार्यवाही का राजनीतिकरण तथा सम्प्रदायिककरण करते हुए देश को तोड़ने की धमकी तक दे डाली।

इसी धमकी का परिणाम बारा बफात/मिलाद– उन–नवी के जुलूसों में देशभर में स्पष्ट दिखाई दिया। प0 बंगाल, केरल, उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान इत्यादि अनेक राज्यों में इस दौरान हिन्दू धर्म स्थलों व बस्तियों में जो हमले हुये वे दुनिया ने देखे।

इसके बाद कश्मीर घाटी के अलगाववादी जो अभी तक कश्मीरियत का हवाला दिया करते थे, अब वे घाटी के 'इस्लामी स्वरूप' को न बदलने देने की चुनौती देने लगे हैं। अब इलाहाबाद व केरल उच्च न्यायालय ने भी, मुसलमानों में, महिलाओं के सन्दर्भ में जो बर्बर कानून हैं, उनसे मुक्ति दिलाने की बात कही है। मद्रास उच्च न्यायालय ने तो शरीयत कोर्ट पर ही प्रतिबंध लगा दिया।

मुस्लिम समाज में पहली बार सुधार आन्दोलन की हवा दिखाई दे रही है। मुस्लिम महिलाएं इन सुधारों के पक्ष में हैं। कुछ प्रबुद्ध मुस्लिम पुरुष भी इन परिवर्तनों का स्वागत कर रहे हैं। विश्व हिन्दू परिषद् का मानना है कि परिवर्तन की ये लहर प्रबल बनेगी और मुस्लिम महिलाओं का इन बर्बर परम्पराओं के आधार पर शोषण नहीं हो सकेगा।

गोवा में समान नागरिक संहिता अनेक वर्षों से लागू होने के बावजूद आज तक वहां कोई समस्या नहीं हुई। फिर भी, शेष भारत में स्वतंत्रता के 69 वर्षों के उपरान्त भी यह लागू नहीं हो सका, यह चिन्तनीय है। विश्व हिन्दू परिषद् प्रन्यासी मण्डल व प्रबंध समिति केंद्र सरकार से मांग करती है कि देश में सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक कानून अविलम्ब लागू कर देश की एकता, मानवाधिकारों की सुरक्षा, महिला उत्पीड़न पर अंकुश तथा कानून व संविधान के प्रति सभी की प्रतिबद्धता सुनिश्चित करे।

(अनुमोदन तिथि : पौष शुक्ल प्रथमा, सम्वत् 2073 **30 दिसम्बर 2016)**

प्रस्तावक : डॉ0 सुरेन्द्र जैन – रोहतक
अनुमोदक : मधुकर राव दीक्षित – गोवा

ग्राम शिक्षा मंदिर द्वारा सामाजिक समरसता को मूर्तरूप

नागपुर, 28 दिसंबर। वनवासी और सुदूर ग्रामीण बंधुओं का सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से समग्र विकास कर उन्हें राष्ट्रीय उत्थान की धारा में सबल रूप से सम्मिलित करने के उद्देश्य से 1988 में ग्राम शिक्षा मंदिर अभियान प्रारंभ हुआ। झारखंड, ओडिशा, बंगाल व म.प्र. के वनवासी क्षेत्रों से शुरु होकर यह अभियान वर्तमान में भारत के 21 राज्यों के 52,437 एवं नेपाल के 1,924 गाँवों में कार्यरत है। बालकों की प्राथमिक शिक्षा से यह अभियान प्रारंभ हुआ जिसमें भाषा व गणित के साथ संस्कार ज्ञान पर आग्रह रहता है।

तीन घंटे की प्रतिदिन की पाठशाला में स्थानीय भाषा में स्थानीय आचार्य द्वारा निःशुल्क शिक्षा देकर बालकों को उच्च शिक्षा से जोड़ने के साथ उत्तरदायी संस्कारित नागरिक निर्माण की आधारशिला रखी जाती है।

"जन्म भूमि का बंटवारा नहीं हो सकता। हिंदू समाज को पूरी भूमि चाहिए। यह भगवान की जमीन है। ये मोदी सरकार का विचार नहीं है। ये हमारा अपना मिशन है। ये मोदी सरकार कल नहीं थी और कल का हमें पता नहीं! मोदी सरकार ने कभी इस मुद्दे पर उन्हें गाइड नहीं किया है।" – चम्पत राय, विहिप महामंत्री

(एबीपी न्यूज, 29 दिस. 2016)

वर्तमान में इन विद्यालयों में पढने वाले विद्यार्थियों की संख्या 15 लाख से अधिक है। महाराष्ट्र में गांवों में शिक्षा मंदिर संचालित हैं, जिनमें से विदर्भ और कोंकण भाग में हैं।

प्राथमिक शिक्षा के साथ–साथ स्वास्थ्य, जैविक कृषि, गौ आधारित खेती, और संस्कार निर्माण के अनेक आयामों का संचालन किया जा रहा है। सक्षम चिकित्सकों एवं विशेषज्ञों द्वारा सुदूर क्षेत्रों में स्वास्थ्य शिविर लगाकर स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ पहुँचाने के साथ तमिलनाडु, ओडिशा, झारखंड, उत्तर पूर्व और राजस्थान के चयनित अंचलों में घरेलू इलाज बावत जागरुकता और प्रशिक्षण दिया जा रहा है जिनमें उन क्षेत्रों में उपलब्ध जड़ी–बूटियों, वनस्पतियों को आधार बनाया गया है।

800 गाँवों में महिलाओं और बालकों में रक्त अल्पता (एनीमिया) पर विशेष प्रकल्प चलाकर अनेक रोगों को जन्मदायी इस समस्या का समाधान किया गया है। यह प्रकल्प अब देश के अन्य क्षेत्रों और अधिक से अधिक गाँवों में लिया जा रहा है। पिछले वर्ष भर से अनेक गाँवों में व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्वच्छता पर अनेक कार्यक्रम प्रारंभ किये गये हैं।

वनवासी अंचलों में सांस्कृतिक चेतना जागृत करने के उददेश्य से हरि कथा योजना के अंतर्गत **700 कार्यकर्ता राम कथा व भागवत कथा के आयोजन तथा रथ योजना के तहत 23 रथ एक चल मंदिर के रूप में तथा रामायण प्रदर्शन करते हुये गाँव–गाँव विचरण करते हैं। 49 हजार से अधिक गांवों में साप्ताहिक सत्संग का आयोजन किया जा रहा है।** जिसमें धार्मिक पुनर्जागरण के अलावा अनेक सामाजिक विषयों पर सघन चर्चा होती है, जिनमें नशा मुक्ति प्रमुख है।

गौ आधारित जैविक कृषि और कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से कृषकों की आर्थिक प्रगति को दृढ़ करने के उद्देश्य से देश में 10 ग्रामोत्थान केंद्र चलाये जा रहे हैं। इन केन्द्रों में पास के लगभग 100 गाँवों के किसानों को विभिन्न प्रशिक्षण प्रदान किये जाते हैं जिनमें कृमि, गोबर, खाद तथा गौमूत्र से कीटनाशकों का उत्पादन, पोषण वाटिका, वृक्षारोपण, जल भंडारण आदि सम्मिलित हैं।

वनांचलों के किशोर–किशोरियों को सिलाई, कंप्यूटर, आदि का प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलंबी बनाने में मदद की जाती है। अभी हाल ही में तीन चल कंप्यूटर लैब प्रारंभ की गई हैं जो गाँव–गाँव जाती हैं जिसमें एक साथ 24 शिक्षार्थी कंप्यूटर का प्राथमिक प्रशिक्षण और अभ्यास करते हैं।

यह अभियान 54,361 अंशकालीन आचार्यों, 6,700 पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं और लगभग 2 लाख से अधिक सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से चल रहा

शेष पृष्ठ 24 पर....

अ.भा. पूर्णकालिक कार्यकर्ता वर्ग

धर्मप्रसार के पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं का अ. भा. वर्ग गुजरात में अहमदाबाद के निकट पिराना ग्राम में सतपंथ–प्रेरणा पीठ में पञ्च दिवसीय वर्ग (६ दिसम्बर–१३ दिसम्बर २०१६) का आयोजन किया गया।

वर्ग में विश्व हिन्दू परिषद् के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष राघव रेड्डी, कार्याध्यक्ष डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया, संगठन महामंत्री दिनेशचंद, सह संगठन महामंत्री विनायकराव देशपांडे, धर्मनारायण शर्मा आदि का प्रेरणादायक मार्गदर्शन मिला।

दिनेशचंद्र जी ने संगठन को सुदृढ़ करने तथा सत्संग एवं धार्मिक जागरण करने का आह्वान किया। विनायकराव ने अतीत में देश के संतों स्वामी रामानंद, संत रविदास, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विद्यारण्य, स्वामी श्रद्धानंद, स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती, एवं चैतन्य महाप्रभु अदि ने धर्मान्तरण से हिन्दू समाज को बचाया तथा बड़ी मात्रा में लाखों हिंदुओं की घरवापसी करवाई, का प्रतिपादन किया। डॉ0 प्रवीण तोगड़िया ने इस्लाम और ईसाइयत ने देश का विभाजन करने तथा अपनी जनसंख्या बढ़ाकर अपना साम्राज्य स्थापित करने के सम्बध में विस्तार से बताया।

राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता सत्यनारायण जी ने भारत दर्शन को पर्देपर (प्रेजेंटेशन) प्रभावी रूप से प्रस्तुतिकरण किया। गुजरात के कलाकारों ने भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

सम्पूर्ण देश के ३६ प्रान्तों के १६१ पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं के कारण सम्पूर्ण भारतवर्ष के दर्शन कर सभी कार्यकर्ता आनंदित थे।

समापन कार्यक्रम में पिराना पीठाधीश्वर ज.गु. नानकदास जी ने शुभाशीर्वाद दिया। डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया ने ओजस्वी मार्गदर्शन दिया।

वर्ग का मार्गदर्शन केंद्रीय मंत्री (विहिप) सुधांशु मोहन पट्टनायक ने किया। केंद्रीय मंत्री जुगल किशोर भी वर्ग में उपस्थित रहे। क्षेत्रीय धर्मप्रसार प्रमुख धर्मेंद्र भाई पटेल तथा प्रबंधकों की सहयोगी मंडली से ने उत्कृष्ट व्यवस्था की, भोजन आदि की व्यवस्था पिराना पीठ की ओर से थी। आभार प्रदर्शन धर्मप्रसार के प्रान्त कार्याध्यक्ष अशोक अग्रवाल ने दिया।

प्रस्तुति : नीरज साहू
कार्यालय प्रमुख

स्वास्थ्य शिविर

विश्व हिन्दू परिषद में डॉ0 प्रवीणभाई तोगड़िया की प्रेरणा से आरंभ हुए इंडिया हेल्थ लाईन प्रकल्प द्वारा मेडिकल चेकअप कैम्प का आयोजन अखिल भारतीय धर्मप्रसार विभाग के पूर्णकालीन कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग में 11 दिसंबर 2016 को सुबह 8.30 12.30 तक प्रेरणापीठ पीराणा कर्णावती में किया गया। आरंभ धर्मनारायण शर्मा एवं जुगलकिशोर द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया।

विहिप के अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष राघव रेड्डी, अ0भा0 सेवाप्रमुख अरविंदभाई ब्रह्मभट्ट, के0 मंत्री सुधांशु मोहन, प्रांत के पदाधिकारी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

इस कैम्प में 200 से ज्यादा लोगों का ब्लडप्रेशर, ब्लड शुगर, हिमोग्लोबिन एवं बीएमआई चेकअप आईएचएल के प्रशिक्षित एम्बेसेडर द्वारा किया गया। चेकअप के पश्चात् स्वास्थ्य संबंधी परामर्श भी दिया गया। कर्णावती शहर सह कन्वीनर तेजस ओझा एवं 15 हेल्थ एम्बेसेडर ने अपनी सेवायें दीं। ऑल इण्डिया काल सेण्टर नंबर– 18602333666 (16 दिस.)

संकलन– तुषार पटेल
इंडिया हेल्थ लाईन, कर्णावती

मीडियाकर्मियों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

भोपाल (म0प्र0), 11 दिसंबर। स्वस्थ भारत सुखमय के संकल्प को पूरा करने के लिए इंडिया हेल्थ लाइन द्वारा आज प्रेस कांपलेक्स में मीडियाकर्मियों के लिए निःशुल्क हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप का शुभारंभ स्वदेश के संपादक राजेन्द्र शर्मा, दैनिक समय जगत के प्रधान संपादक अशोक त्रिपाठी और सांध्य दैनिक अग्निबाण के संपादक रविन्द्र जैन ने किया। राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि स्वस्थ भारत, सुखमय भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए इण्डिया हेल्थ लाइन के प्रयास प्रशंसनीय हैं।

एक वर्ष में भोपाल शहर में 65 स्वास्थ्य शिविर में 2280 लोगों को लाभ हुआ है। इस शिविर में जितेन्द्र जाट की

अगुवाई में डॉ0 जितेन्द्र मिश्रा, प्रतिभा हुमने, हेमराज कैथेले, रामेश्वर चौहान, गोपाल पंवार, आलोक कुमार सिंह, आरती मिश्रा आदि भी मौजूद रहे। pgourvhp@gmail.com

धर्मान्तरण रोकने हेतु विहिप का अभियान

22.12.2016। विहिप धर्मप्रसार द्वारा धार, झाबुआ, अलीराजपुर (मध्य प्रदेश) जिलों में हो रहे धर्मान्तरण को रोकने योजना बनाई गई। विहिप विभाग संगठन मंत्री दीपक मकवाना ने बताया कि चर्चों में जहां मंदिर लिखे हुए बोर्ड लगे हैं, इसका हम पुरजोर विरोध करेंगे।

आगामी फरवरी माह में झाबुआ जिले में संत प्रवास योजना के अन्तर्गत सातों प्रखंड में संतों को ले जाया जायेगा। बैठक में खुमसिंग महाराज, जिला धर्मप्रसार प्रमुख राजू निनामा, जिला मंत्री धर्मप्रसार रमेश निनामा, रामा खराडी भी उपस्थित रहे।

deepakmakwanavhp@gmail.com

सत्संग अभ्यास वर्ग

धर्मप्रसार के कार्य का विस्तार और संगठनात्मक कार्य को आगे बढ़ाने के लिए १७ दिसम्बर, २०१६ को इंद्रप्रस्थ प्रांत का अभ्यास वर्ग दिल्ली में आयोजित किया गया। प्रमुख रूप से सत्संग टोली का प्रशिक्षण कराया गया। सत्संग का स्वरूप एवं उसके प्रमुख बिंदु, सत्संग के अनुक्रम की जानकारी दी गयी और इनका अभ्यास कराया गया। सुधांशु जी–केंद्रीय मंत्री (विहिप) ने मार्गदर्शन किया।

niraj.sahoo@gmail.com

ग्राम प्रतिनिधियों की बैठक

24 दिस. को थट्टेपल्ली ग्राम, जि0 विकराबाद (तेलंगाना) में आयोजित ग्राम विकास समिति की बैठक में 24 गांवों के 140 प्रतिभागी सहभागी हुए। बैठक को विहिप– केन्द्रीय सहमंत्री जी0 सत्यम्, धर्मप्रसार प्रांत प्रमुख राजगोपाल नायडू, विभाग प्रमुख पी0 सुभाष रेड्डी ने भी सम्बोधित किया।

gsatyam.vhp60@gmail.com

भीलवाड़ा में मौन प्रदर्शन

कहीं भीलवाड़ा (वस्त्र नगरी) को चंद असामाजिक तत्वों द्वारा कैरोना–मुजफ्फर नगर बनाने की साजिश तो नहीं ????? विगत लगभग 13(तेरह) वर्षों से भीलवाड़ा में असामाजिक तत्वों द्वारा भीलवाड़ा की शांति को समाप्त करने के भरसक प्रयत्न किये जा रहे थे। किंतु 12 दिसम्बर को जो पुलिस प्रशासन की उपस्थिति में (जो

11 दिसम्बर भोपालपुरा क्षेत्र माताजी मंदिर के चारों और झंडियाँ लगाना, क्षेत्रवासियों की आपत्ति पर पुलिस प्रशासन दारा झंडियाँ हटाई गईं।

11–12 दिसम्बर रात्रि 12बजे बाहला मे (विगत २० माह से २–३ सक्रिय परिवार विभिन्न त्यौहारों पर झगड़ना। रात्रि १२–१२ बजे तक घर के बाहर हुड़दंग करना गालियाँ देना)सोनी

सैकड़ों उपद्रवियों द्वारा अलग–२ प्रमुख मार्गों पर साथ में लाये बिना अनुमति के (हर बार नहीं लाते) हथियार लाठी–डंडों पत्थरों से घरों एवं प्रतिष्ठानों पर पथराव के साथ, सैकड़ों दुपहिया–चार पहिया वाहनों के साथ तोड़–फोड़ कर प्रशासन के सामने कानून को धता बताते हुए संपूर्ण शहर में भय का वातावरण निर्माण किया।

जुलूस के आधा मार्ग तय कर पुनः बाहला क्षेत्र में आने पर सभी हिन्दू समाज के घरों पर पथराव किया, प्रशासन ने बाद में उपद्रवियों को तितर–बितर करने के लिए अश्रु गैस का

की फोटो, वीडियो....में स्पष्ट है) में सामूहिक उत्पात किया वो आश्चर्यजनक तो है ही। इससे अधिक आश्चर्य पिछले सप्ताह की अशांति फैलाने की घटनाओं से है ।

24 नवम्बर। तेजाजी चौक में तेजाजी मंदिर के जीर्णोद्धार कार्यक्रम मे अनावश्यक आपत्ति कर माहौल खराब किया गया।

शौर्य दिवस 6 दिसम्बर (बारावफात 12 दिस. को) दोपहर से तेजाजी चौक, शीतला माता मंदिर के आसपास झंडिया लगाकर धार्मिक उन्माद फैलाना ।

7 दिसम्बर अपना घर योजना (भवानी– नगर) 200 मुस्लिम घरों के मध्य लगभग 22 घरों की हिन्दू परिवारों की आपत्ति के बावजूद जातिगत टिप्पणी के साथ डरा–धमका कर घरों के बाहर, होली दहन के स्थान पर 40 फीट ऊँची (लगभग) झंडियां लगाई, पुलिस के आकर, जाने के बाद घर मे घुसकर मुँह काला करने की, बच्चों को मारने की धमकियाँ दी।

परिवार को गाड़ी हटाने के नाम पर घर से बाहर बुलाकर सुनियोजित रूप से हमला,घर पर पथराव किया, महिलाओं के साथ अभद्रता की ।

12 दिसम्बर को समाज एवं क्षेत्र के लोगों को जानकारी होने विरोध दर्ज कराने थाने पर गये उसी समय पीछे से मुस्लिम समाज मे जो उपद्रवी थे। उन्होंने थाने को घेरने का प्रयास किया, उसके बाद पुराने क्षेत्र मे पथराव के साथ, जलुस में शामिल होने के नाम पर

इस्तेमाल कर स्थिति को सामान्य करने का प्रयास किया ।

13 दिस. को इसी पुराने क्षेत्र मे पत्थरों की सप्लाई हुई, प्रशासन की जानकारी में भी है और यह जन चर्चा का भी विषय है ! प्रशासन को संपूर्ण क्षेत्र का तलाशी अभियान लेकर गत 12–13 वर्षों से भीलवाड़ा में जो यह कुटिलतापूर्वक (ऐसा आभास होता है) षड्यंत्र रचा गया इसका पर्दाफाश करना चाहिए।

vineetdwivedi1981@gmail.com

जिला बैठक

जैसलमेर, 22 दिसंबर। विहिप के केंद्रीय मंत्री महावीर जी एवं विश्व हिंदू परिषद प्रांत मंत्री भंवरलाल चौधरी के सीमांत जिले में एक दिवसीय प्रवास पर विश्व हिंदू परिषद जैसलमेर की जिला बैठक का आयोजन स्थानीय आदर्श विद्या मंदिर हनुमान चौराहा जैसलमेर में विहिप जिलाध्यक्ष अनोपसिंह पिथला की अध्यक्षता में किया गया।

महावीर जी ने विश्व के श्रेष्ठ एवं पुरातन हिंदू धर्म और संस्कृति की सुरक्षा के लिये जैसलमेर के हिंदू समाज के युवाओं को आगे आने का आह्वान करते हुए कहा कि सीमांत जिला जैसलमेर पाकिस्तान जैसे आतंकी देश के पड़ोस में होने से राष्ट्र के प्रति अधिक जिम्मेदारी से संगठन के कार्य की आवश्यकता है।

विहिप के जिला मंत्री पवन वैष्णव ने विहिप के प्रांत मंत्री श्री भंवरलाल चौधरी के अनुमोदन से नवीन दायित्वों की घोषणा की।

vhpjaisalmer@gmail.com

आतंकवाद को प्रश्रय पर सवाल

'आईएसआईएस के पकड़े हुए आतंकवादी को धौलपुर मैदान में जिंदा जला देना चाहिए फिर कोई आतंकवादी बनने की हिम्मत नहीं करेगा, हिमाचल में आतंक की शरणस्थली नहीं बन पाएगा।'

दुर्गा वाहिनी की क्षेत्रीय संयोजिका रजनी ठुकराल ने सरकार को उक्त

बयान द्वारा कटघरे में खड़ा किया। उन्होंने कहा कि सरकार व सरकार के नुमाइंदे डीजीपी से पूछा जाए जब विश्व हिंदू परिषद मांग उठा रहा था कि हिमाचल में षड्यंत्र द्वारा विशेष समुदाय द्वारा लड़कियों को भगाया जा रहा है, अब उसकी पुष्टि करता दिखाई दे रहा है!

सिरमौर में नाहन, चंबा, ज्वालामुखी, शिमला, कुल्लू आदि स्थानों से लड़कियां लापता है जिनकी खोज प्रशासन आज तक नहीं कर सका है। कुल्लू में आईएसआईएस का आतंकवादी पकड़ा गया।

उससे पहले टुंडा कुल्लू की घाटियों में छिपा देखा गया, पोंग डैम की भी आतंकवादी द्वारा रेकी हुई है।

हमारी मांग है कि चर्च, मदरसे व मजारों पर बैठने वाले लोगों का पता सरकार के पास होना चाहिए पता नहीं कितने आतंकी अब भी चर्च, मदरसे और मजारों में छिपे हुए बैठे हैं।

vhp.manoj77@gmail.com

मंदिर में लिखा *आइएसआइएस कमिंग सून*

सोलन। हिमाचल प्रदेश में कुल्लू जिले के बंजार में इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सीरिया (आइएसआइएस) के आतंकी के पकड़े जाने के बाद अब सोलन के धर्मपुर स्थित एक मंदिर में आइएसआइएस के नारे लिखे गए हैं।

नववर्ष के दूसरे ही दिन आइएसआइएस की मौजूदगी का सुबूत मिलने से लोगों में दहशत का महौल है। सूचना मिलते ही पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। धर्मपुर में कालका–शिमला राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित मनसा माता मंदिर के प्रवेश द्वार पर देर रात किसी अज्ञात व्यक्ति ने आइएसआइएस की मुहर लगाई है। इस संबंध में लोगों ने धर्मपुर पंचायत प्रधान ओम प्रकाश को जानकारी दी तो उन्होंने तुरंत पुलिस थाना धर्मपुर में सूचना दी। इसके बाद थाना प्रभारी अनिल ठाकुर की अगुआई में टीम ने निरीक्षण किया।

आइएसआइएस की मुहर में कुछ लाइनें अरबी भाषा में लिखी गई हैं। इसके अनुवाद के लिए पुलिस ने स्थानीय मुस्लिम व्यक्ति को बुलाया तो उसने बताया कि उर्दू में ला अल्ला इल्ल इल्ल लह और अंग्रेजी में आइएसआइएस कमिंग सून लिखा हुआ है। (जागरण, 3 जनवरी)

संत सम्मेलन २५ जनवरी को

पत्रांक विहिप/555/2016 के अनुसार ज0गु0 शंकराचार्य जी स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती जी– शिविर माघ मेला क्षेत्र, प्रयाग उ0प्र0 में संत सम्मेलन 25 जनवरी को अपराह्न से आहूत किया जा रहा है। इसके पूर्व विहिप के जिला धर्माचार्य संपर्क प्रमुख (कार्यकर्ता) तथा जिला मार्गदर्शक मण्डल संयोजक (संत) का वर्ग 23 जनवरी प्रातः से 24 जनवरी मध्याह्न आयोजित किया जाएगा। विस्तृत जानकारी हेतु संपर्क : अशोक तिवारी धर्माचार्य संपर्क प्रमुख, मो0– 09455004933

प्रखण्ड बैठक

जयपुर (राजस्थान), 17 दिसम्बर, 2016। बजरंग दल की रामद्वारा सांगानेर में प्रखण्ड बैठक आयोजित की गई। बैठक को बजरंग दल प्रान्त संयोजक अशोक सिंह राजावत ने सम्बोधित किया। बैठक में कार्यकर्ताओं को प्रकाशानन्द जी महाराज बड़ा रामद्वारा का आशीष प्राप्त हुआ।

जिला मंत्री विहिप सांगानेर ने बताया कि कार्यकर्ताओं को बजरंग दल कार्य विस्तार हेतु दायित्व दिया गया। बैठक में विनोद यादव, बनवारी गुर्जर, राहुल शर्मा, राजेश स्वामी, सुभाष शर्मा आदि कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

vhpravindra21@gmail.com

समरसता बैठक २५ फरवरी से

विश्व हिन्दू परिषद के सामाजिक समरसता विभाग की अखिल भारतीय बैठक जोधपुर प्रांत (राजस्थान) में सम्पन्न होगी। अपने क्षेत्र व प्रांत से सामाजिक समरसता कार्य के लिए अपेक्षित प्रांतीय स्तर के और जो प्रांत में अभी घोषित नहीं हैं, वहां से भी आगामी कार्य के लिए दो योग्य कार्यकर्ताओं को बैठक में भेजने का हृदय से प्रयास करें, ऐसी प्रार्थना है।

बैठक : दिनांक 25–26 फरवरी (शनिवार, रविवार), 2017
24 फरवरी, 2017 की सायंकाल तक बैठक स्थल पर पहुंचना है।

बैठक स्थल : श्रीराम गीता भवन, झांसी रानी सर्कल, सुमेरपुर–306 902, जिला–पाली (राज0)

संपर्क हेतु : श्री कमलेश मेडतिया : 08094789789
श्री दिवेश कुमावत प्रांत संयोजक समरसता – 07742424848, 09828789725
प्रस्तुति : महावीर जी, केन्द्रीय मंत्री–विहिप व देवजीभाई रावत, केन्द्रीय सहमंत्री

सोमनाथ में गोवर्धन मठ पीठाधीश्वर

श्री जगन्नाथपुरी से गोर्वधन मठ के पीठाधीश्वर श्रीमद्जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज का 4 दिन का प्रवास श्री सोमनाथ में हुआ जिन्होंने 3 कार्यक्रम में पधार कर हिंदुओं को आशीर्वचन व दर्शन दिए।

30 नव0 शाम 5 बजे श्री सनातन महाधर्मसभा कार्यक्रम में विहिप के गुजरात प्रदेश के क्षेत्र संगठन मंत्री रोहित भाई दरजी, हर्षद भाई पंड्या प्रदेश अध्यक्ष धर्मयात्रा महासंघ अधिकारी तथा विहिप परिवार के सभी लोग उपस्थित रहे।

1 दिसं. को कालेज के विद्यार्थियों को संबोधन श्री स्वामी नारायण गुरुकुल सोमनाथ– सुबह 11 बजे।

01 दिसं. को 5 बजे शाम विद्वत गोष्ठी सांस्कृतिक भवन सोमनाथ।

पूज्यगुरुजी के साथ– साथ श्री नारायण चरण पादुका की सवारी भी श्री सोमनाथ में पधारी थी। पूज्य जगद्गुरु के प्रवास कार्यक्रम का आयोजन धर्मयात्रा महासंघ सोमनाथ जिला ने किया।

प्रस्तुति : संयोजक, अजीत वशिष्ठ राष्ट्रीय सचिव धर्मयात्रा महासंघ।

सह संयोजक कौशिक पंड्या प्रदेश अध्यक्ष तीर्थ पुरोहित।

धर्म, जाति, समुदाय, नस्ल या भाषा के नाम पर वोट पर रोक संबन्धित निर्णय स्वागत योग्य: विहिप

नई दिल्ली, 2 जनवरी, 2017। राजनीतिक पार्टियों द्वारा धर्म, जाति, समुदाय, नस्ल या भाषा के नाम पर वोट मांगने पर सर्वोच्च न्यायालय के रोक लगाने के फैसले का विश्व हिंदू परिषद ने स्वागत किया है।

विहिप के संयुक्त महामंत्री डा सुरेन्द्र जैन ने निर्णय को अभूतपूर्व बताते हुए कहा है कि जाति, समुदाय तथा धर्म के आधार पर राजनीति से देश का बहुत नुकसान हुआ है। यहाँ तक कि इससे अनेक बार राष्ट्रीय अखण्डता को भी नुकसान पहुंचा है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय से तुष्टिकरण के आधार पर की जाने वाली वोट बैंक की राजनीति पर जो आघात हुआ है, उसके दूरगामी परिणाम होंगे। यह फैसला राष्ट्र निर्माण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

उन्होंने यह भी कहा कि अब इस फैसले के अक्षरशः पालन कराने की बडी जिम्मेवारी चुनाव आयोग की है। हम भारत के चुनाव आयोग से अपील करते हैं कि जो भी राजनेता या दल इस आदेश या इसके किसी भाग का पालन नहीं करते, उनकी चुनावी मान्यता को अविलम्ब रद्द कर दिया जाए।

ज्ञात हो कि सर्वोच्च न्यायालय ने 2 जनवरी को कहा कि जाति, समुदाय, धर्म तथा भाषा के नाम पर वोट मांगना अवैध है। प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति टी. एस.ठाकुर के नेतृत्व में एक संवैधानिक पीठ ने जन प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 123 (3) के आधार पर 4:3 के बहुमत से फैसले से आदेश को पारित किया।

@vinod_bansal M&9810949109

शासकीय अवरोधों के बावजूद धूलागढ़ (बंगाल) के उत्पीड़ित हिंदुओं की विहिप ने सुध ली

धूलागढ़ में बारावफात के जुलूस के दौरान सम्प्रदाय विशेष के असामाजिक तत्वों द्वारा हिंदू घरों व दुकानों को जला दिया गया। परिणामस्वरूप हिन्दू जनता को पलायन करना पड़ा।

धूलागढ़ झूड़ी आश्रम के पूज्यपाद श्री असित चैतन्यजी, विहिप न्यासी श्रीगोपाल झुनझुनवाला व केन्द्रीय सहमंत्री नन्दलाल लोहिया के नेतृत्व में विहिप टीम ने पीड़ित हिंदुओं से मिलने का प्रयास किया, परन्तु शासकीय अवरोधों के कारण ऐसा संभव नहीं हो पाया।

25 दिसंबर को धूलागढ़ पश्चिम में विहिप टीम ने उत्पीड़ित हिंदुओं से भेंट कर, उनका दुःख दर्द सुना। 300 कंबल, साड़ी, गमछा तथा अन्य आवश्यक वस्तुएं पीड़ितों को प्रदान की गईं।

धूलागढ़ मध्य में विहिप टीम द्वारा जरूरतमंद हिन्दुओं को सौ गमछे एवं एक सौ साठ साड़ियां 6 जनवरी को प्रदान की गई।

nllohia@hotmail.com

ब्रह्मलीन धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज

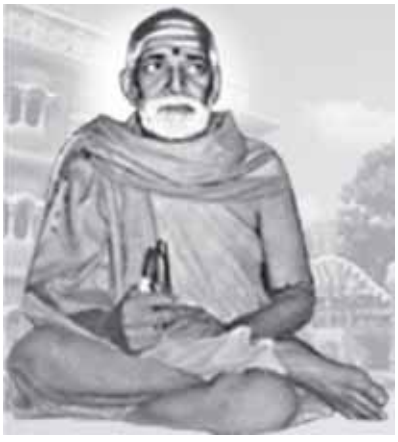

गतांक से आगे.....

करपात्रीजी की चतुः सूत्री

१. धर्मकी जय हो ।
२. अधर्मका नाश हो ।
३. प्राणियोंमें सद्भावना हो ।
४. विश्वका कल्याण हो ।

सुमेरुपीठ की स्थापना

धर्मप्रचारार्थ देश के चारों कोनों में चार पीठों की स्थापना आदिशंकराचार्य ने की थी। परंतु, शास्त्रों में इसके अतिरिक्त सुमेरुपीठ का वर्णन भी मिलने के कारण महाराजश्री ने काशीमें पांचवें पीठ 'सुमेरुपीठ' की स्थापना की, जिसके शंकराचार्य–पद पर सर्वप्रथम अनंतश्री स्वामी महेश्वरानंद सरस्वतीजी महाराज का प्रयागराज में अभिषेक किया गया।

दिनचर्या

स्वामी श्रीकरपात्रीजी की दिनचर्या भी विलक्षण थी, जिसे उनके भक्तगण भी नहीं जान पाए। वे प्रतिदिन रात्रिमें १ बजे उठ जाते और तत्काल स्नानकर जप–ध्यान–समाधिमें बैठ जाते। प्रातः ३ बजे शौचादि कृत्योंसे निवृत्त होकर पुनः स्नान करते तथा ३. ३० बजे से ५ बजे तक एकाकी भ्रमण (चार–पांच मिल पैदल घूमना) करते। भ्रमण के समय आगमोक्त स्तोत्र–पाठ तथा जप चलता रहता।

प्रातः ५ बजे से ८ बजे तक पूजन–अर्चन की क्रिया सम्पन्न होती। उनका यह कार्यक्रम नित्य नियमित रूप से चलता रहता। यहां तक कि यात्रा में भी वे इस कार्यक्रम का निर्वाह पूरी तत्परता से करते। महाराज की यात्रा लोहगामीत से नहीं होती थी, वे मोटरकार से ही यात्रा करते थे। रात्रि में गाड़ी तब तक चलती, जब तक उनका शयन चलता रहता। रात्रि में १ बजे गाड़ी रोक दी जाती और वे अपने दैनिक कृत्यों में व्यस्त हो जाते।

महाराज की पूजा–अर्चा प्रतिदिन ३ बार होती थी। प्रातः कालीन पूजा प्रायः एकाकी करते थे। मध्याह्नकालीन पूजा दिन में लगभग १२ बजे तथा सायंकालीन पूजा रात्रि में ७.३० से ९.३० बजेतक चलती। दोपहर और रात्रि का पूजन सर्वसाधारण भक्तजनों के मध्य होता। प्रातः ८ से १२ तक तथा सायं ६ से ७.३० के मध्य सर्वसाधारण से मिलने–जुलने तथा पठन–पाठन, स्वाध्याय और लेखन आदि कार्य होता।

चौबीस घंटे में एक बार सायंकाल लगभग ५ बजे सूर्यास्त के पूर्व महाराज की भिक्षा होती थी, जिसमें नमक और चीनी का प्रयोग वर्जित होता था। गोदुग्ध उपलब्ध होने पर भिक्षा के साथ एक बार ही लेते। यह बात प्रसिद्ध थी कि महाराज को भिक्षा ग्रहण करने में समय नहीं लगता था, ३ अथवा ५ पल में ही उनकी भिक्षा समाप्त हो जाती थी। जो समय लगता था, वह केवल भगवान का भोग लगाने में ही लगता था।

प्रातः, रात्रि तथा अन्य समय में एक बार भिक्षा ग्रहण कर लेने के पश्चात् वे फल इत्यादि भी ग्रहण नहीं करते थे। आवश्यकता पड़ने पर औषधि अथवा उससे संबंधित अनुपान के पदार्थ आदि ही स्वीकारते थे।

परिपक्व वैराग्य

ग्रीष्म, वर्षा, शिशिर सभी ऋतुओं में वे प्रायः एक ही चादर ओढ़कर सोते थे।

निर्जला एकादशी–व्रत

महाराजजी नियम के अटल थे। प्रत्येक एकादशी को उनका निर्जल व्रत रहता था। मार्ग में या कहीं भी भीषण–से–भीषण ग्रीष्मकाल अथवा आपत्काल में भी वे एकादशी को जल ग्रहण नहीं करते थे।

सनातनधर्म–विजय महोत्सव

स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्वाण को १०० वर्ष पूरे होने पर आर्यसमाज ने उनका शताब्दी समारोह मनाया और यह घोषणा की कि स्वामी दयानन्द के अनुयायी आर्यसमाजी विद्वान् शास्त्रार्थ में, दिग्दिगन्त में विजय–यात्रा करते हुए पधार रहे हैं। यहां ये अवतारवाद, मूर्तिपूजा और श्राद्धादि रूढ़ियों का खण्डन करेंगे। जो चाहे उनसे शास्त्रशास्त्रार्थ कर सकता है।

महाराजश्री इस आह्वान को कब सहन कर सकते थे । उन्होंने तुरंत इस आह्वान को स्वीकार करते हुए कहा, 'धार्मिक क्षेत्र में भी पंचशील का सिद्धांत माना जाना चाहिए।

अपनी–अपनी आस्था–मान्यता और विश्वास के अनुसार सबको अपने धार्मिक कृत्य सम्पन्न करने का अधिकार है। परंतु किसी के धर्म में हस्तक्षेप और आक्रमण कभी सहन नहीं किया जा सकता। अतः उसका प्रतिकार किया जाएगा।' इस सिद्धांत की रक्षा के लिए उन्होंने शास्त्रार्थ भी करना स्वीकार किया।

महाराजजी का यह स्वभाव था कि वे शास्त्र के विरुद्ध कुछ भी सुनना नहीं चाहते थे। कोई कितना भी निकटतम व्यक्ति क्यों न हो, यदि वह शास्त्र–शास्त्रीय सिद्धातों के विरुद्ध कुछ कहता है अथवा लिखता है, तो महाराज तत्काल उसका खण्डन करते और उस बात का युक्ति और तर्कसहित शास्त्र–शास्त्र के पक्ष में उत्तर देते थे।

क्रमशः

पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाने के पर्याप्त कारण : डॉ. स्वामी

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के सांसद डॉ. सुब्रह्मण्यन स्वामी ने पश्चिम बंगाल की ममता सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने आरोप लगाया है कि राज्य में ममता सरकार ठीक से अपनी जिम्मेदारियों को नहीं निभा पा रही है, प्रदेश में कानून व्यवस्था ठीक नहीं है। इसलिए पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाने के केंद्र के पास पर्याप्त कारण हैं।

डॉ. स्वामी ने मांग की है कि ममता सरकार को संविधान के आर्टिकल 355 के तहत नोटिस भेजा जाना चाहिए और अगर जरूरी हो तो पश्चिम बंगाल में संविधान के आर्टिकल 356 के तहत राष्ट्रपति शासन लगा देना चाहिए। उन्होंने कहाकि संविधान के अनुसार ममता कार्य नहीं कर पा रही हैं। 356 लगाने का नोटिस भेजना चाहिए। संविधान में केंद्र को ये अधिकार दिया गया है। बता दें कि नोटबंदी के बीच टीएमसी सांसद सुदीप बंद्योपाध्याय की गिरफ्तारी ने टीएमसी को हमलावर बना दिया है और बीजेपी से उसका घमासान चरम पर है।

(न्यूज 18 इंडिया डॉट काम,

धात्री माताओं द्वारा दुग्धदान से, 3693 शिशुओं की प्राण रक्षा

उदयपुर। राजस्थान के उदयपुर में स्थापित उत्तर भारत के पहले दिव्य मदर मिल्क बैंक में धात्री माताओं ने दुग्धदान करने से अब तक साढ़े तीन हजार से अधिक शिशुओं की जान बची है।

मां भगवती सेवा संस्थान के संस्थापक एवं राज्य सरकार के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के सलाहकार योग गुरु देवेन्द्र अग्रवाल ने पत्रकारों को यह जानकारी देते हुए बताया कि बैंक में 6193 माताओं ने दुग्धदान कर 3693 कमजोर शिशुओं को मौत के मुंह में जाने से बचाया।

देश में शिशु मृत्यु दर को न्यूनतम करना एवं नवजात शिशु जो किन्ही कारणों से मां के दूध से वंचित हैं, उन्हें मां का दूध उपलब्ध कराने के उद्देश्य से चार वर्ष पूर्व संस्थान द्वारा मदर मिल्क की स्थापना की गई थी। इसमें इन धात्री माताओं ने कुल 41 हजार 722 यूनिट दूधदान किया गया।

श्री अग्रवाल ने बताया कि संस्थान की दत्तक ग्रहण स्थापन्न अभिकरण योजना द्वारा 118 बच्चों का दत्तक गृहण के माध्यम से एवं 20 बच्चों का अन्य माध्यम से पुर्नवास किया गया।

(नया इंडिया न्यूज, 2 जनवरी)

पृष्ठ 17 का शेषांश...

मिलिन्द पराण्डे
नवनियुक्त संयुक्त महामंत्री

है। समय–समय पर अभियान के कार्यों के समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन विशिष्ट संस्थाओं द्वारा किया गया है।

यथा भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM) बैंगलुरु, टाटा धान अकादमी, एस्पायरिंग माइंडस आदि, जिनमें पाया गया है कि एकल विद्यालय और अन्य गतिविधियों से उस समाज में सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार हुआ है, शिक्षा व स्वास्थ्य का स्तर बढ़ा है, नशा मुक्ति में सफलता मिली है और सामाजिक समरसता का निर्माण हुआ है।

अभियान की योजना के तहत आगामी 5 वर्षों में देश के एक लाख गांवों तक अपनी पहुंच का विस्तार करने का लक्ष्य रखा गया है।

विहिप महामंत्री चम्पत राय ने विहिप– गतिविधियों (जुलाई–दिसंबर, 2016) का विवरण अर्थात् अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जिसमें अधिकांश का विवरण 'हिन्दू विश्व' के विगत अंकों में देखा जा सकता है।

जर्सी गायों के पाद से ओजोन लेयर में हो रहा छेद : वैज्ञानिक

बढ़ते प्रदूषण की वजह से दुनिया भर के वैज्ञानिक इन दिनों खोज में लगे हैं कि क्लाइमेट चेंज से कैसे निपटा जाए। वहीं इस बारे में गुजरात के जामनगर की आयुर्वेद यूनिवर्सिटी के एक रिसर्चर ने हैरान कर देने वाला दावा किया है।

खबर– अनुसार रिसर्चर ने कहा है कि पश्चिमी देशों की गाय की डकारों और पाद के कारण ओजोन लेयर पर बुरा असर पड़ रहा है, वहीं भारतीय देसी गाय ग्लोबल वॉर्मिंग के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। गुजरात गोसेवा और गोचर विकास बोर्ड ने इस रिसर्च को करने वाले डॉ हितेश जानी को गायों से निकलने वाली गैस से पर्यावरण पर पड़ने वाले असर की जांच करने की जिम्मेदारी दी गई थी। जिस पर डॉ0 हितेश ने अपने रिसर्च पेपर में कहा है कि पश्चिमी देशों की गाय ग्लोबल वॉर्मिंग के लिए जिम्मेदार हैं।

ओजोन लेयर के लिए नुकसानदायक पश्चिमी गाय

'पंचगव्य चिकित्साः सदी की दवा' नामक रिसर्च पेपर में डॉ0 हितेश ने लिखा है "भारत में हम देसी गायों पर ज्यादा ध्यान नहीं देते वहीं मोटी जर्सी गाय दिनभर खाती या पीती रहती हैं।" "जर्सी गाय ज्यादा बीमार होती हैं और उन्हें ऐंटीबायोटिक भी बहुत दी जाती हैं। इन गायों के पाद और डकारों में मीथेन गैस निकलती है जिससे ओजोन लेयर में छेद हो रहा है।" वहीं दूसरी ओर इस पेपर में भारतीय मूल की गायों की पश्चिमी गायों के मुकाबले तारीफ की गई है। रिसर्च पेपर अनुसार पश्चिमी गायों का ए–1 दूध कई बीमारियों का कारण बनता है, वहीं ए–2 देशी गायों का दूध कई बीमारियों के लिए दवाई की तरह है।

अद्भुत रसायनशाला है देशी गाय

अमेरिकन वैज्ञानिक भारतीय गाय जर्सी गाय के ए–1 दूध में 7 ऐमिनो ऐसिड होते हैं, जो मनुष्य के अंदरूनी अंगों के साथ रिऐक्ट करते हैं। लेकिन ए–2 दूध (भारतीय मूल की गायों का दूध) स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है, जो हमारे प्रतिरोधक तंत्र को मजबूत करता है। न्यूजीलैंड के एक वेटनरी वैज्ञानिक और प्रोफेसर के अनुसार ए–1 दूध मधुमेह, दिल से जुड़े रोग, ऑटिस्म जैसी बीमारियों का कारण बनता है। (23 दिस.)

http://hindi.revoltpress.com

गौ विज्ञान विश्वविद्यालय

IIT दिल्ली में आयोजित एक वर्कशॉप के दौरान वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं द्वारा 40 मुख्य तथ्यों का सेट तैयार किया गया। इस वर्कशॉप का थीम था 'साइंटिफिक वेलिडेशन ऑफ पंचगव्य'।

वर्कशॉप के 40 मुख्य तथ्यों में गौ विज्ञानं विश्वविद्यालय के विषय जैसी बातें शामिल है। इस विश्वविद्यालय का काम गौ–मूत्र में कैंसर विरोधी तत्वों पर शोध करना होगा। ये वर्कशॉप पंचगव्य से होने वाले शारीरिक लाभ पर चर्चा करने हेतु की गई थी। पंचगव्य 5 गौ तत्वों से मिलकर बनाया जाता है, जिनमें दूध के साथ दही, घी, गौ–मूत्र और गोबर शामिल हैं। इस वर्कशॉप में प्रमुख वैज्ञानिक और गाय के शोधकर्ताओं को आमंत्रित किया गया था। जिन्होंने पंचगव्य को मेडिकल साइंस में शामिल करने हेतु और ग्रामीण क्षेत्रों में इसके द्वारा विकास हेतु तथ्यों पर चर्चा की।

उत्तराखंड के पशु विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. आरएस चौहान ने कहा कि गाय पर उनके द्वारा की गई शोध के आधार पर उनका दावा है कि गौ–मूत्र से कैंसर का इलाज संभव है और साथ ही यह आत्मक्षमता बढ़ाने में भी कारगर है।

केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने कहा कि गाय को धर्म से ऊपर उठकर देखने की जरूरत है। उन्होंने पंचगव्य के लाभ को लोगों तक पहुंचाने हेतु काम करने के लिए कहा।

'साइंटिफिक वेलिडेशन एंड रिसर्च ऑन पंचगव्यम' नामक यह वर्कशॉप (CSIR) सेंटर फॉर रूरल डेवलेपमेंट एंड टेक्नो लॉजी एवं IIT दिल्ली द्वारा मिलकर केंद्र सरकार की निगरानी में आयोजित की गई थी। इस वर्कशॉप के आधार पर गाय से जुड़े ढ़ेरों प्रोजेक्ट्स पर केंद्र द्वारा काम किये जाने की उम्मीद है। HRD के तहत चलाया जा रहा उन्नत भारत अभियान भी इसमें सहभागी है। (20 दिसं.) hindi.revoltpress.com

फिनलैंड में बेरोजगारों को हर महीने मिलेंगे ४० हजार

फिनलैंड में बेरोजगारों के लिए यह साल असल में खुशियों से भरा साबित हो रहा है। फिनलैंड यूरोप का पहला ऐसा देश बन गया है जो अपने बेरोजगार नागरिकों को हर महीने 587 डॉलर यानी लगभग 40 हजार रुपये देगा। देश में गरीबी कम करने और रोजगार को बढ़ावा देने के मकसद से सरकार ने यह अनोखी पहल की है।

हालांकि फिलहाल इस योजना को प्रायोगिक तौर पर लॉन्च किया गया है। फिनलैंड सरकार की एजेंसी KELA के ओली कंगस ने बताया, 'यह ट्रायल दो साल के लिए शुरू किया गया है और इसके लिए 2000 हजार बेरोजगारों को चुना गया है जिन्हें एक जनवरी से इस सुविधा का फायदा मिलेगा।' इस सुविधा को पाने वाले लोगों को यह भी बताना जरूरी नहीं है कि वे पैसा कहां खर्च कर रहे हैं। (एएफपी, 4 जन.)

रामायण के लिए छोड़ दी अंग्रेजी

दो वर्ष में हिंदी सीखा अपना लिया हिन्दू धर्म

जबलपुर (म.प्र.)– वर्ल्ड रामायण कांफ्रेंस में शामिल होने आए ढेरों विदेशियों ने रामायण संबंधित अपने अपने विचार साझा किये। उन्होंने रामायण और हिन्दू धर्म से जुड़ाव होने के लिए अपने अपने जीवन की घटनाएँ बताई।

हिन्दू धर्म अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ हवॉई में धर्म विभाग के प्रोफेसर रामदास ने बताया कि उनके गुरु ने दो वर्ष तक अंग्रेजी न बोलने का संकल्प दिला दिया। उन्होंने उस दौरान हिंदी सीखी। दो वर्ष तक लगातार अभ्यास के बाद हिंदी में ही बात करता हूं। उनकी मां काफी गरीब थीं, जो दूसरों के घरों में सफाई करने जाया करतीं थीं। वहां से वें पुस्तकें लेकर आती थीं। बस एक बार भारतीय पुस्तक लेकर आईं, जिसे पढ़कर भारत आने का मन हुआ। 20 साल की उम्र में वे पहली बार भारत आए। 22 वर्ष की उम्र में दूसरी बार भारत आना हुआ। जहाँ चित्रकूट में मानस महारथी महाराज के सान्निध्य में दीक्षा ले हिन्दू धर्म अपना लिया।

इन्होंने खोजा भारत के मंदिरों का इतिहास

अमेरिका के डॉ. स्टीफन कनाप को हर विषय की गहराई में जाना अच्छा लगता है। 1973–74 में रामायण के बारे में उन्हें जानकारी मिली, जिसे पढा और इसकी खोज में भारत आए। यहां रामायण के संबंध में उन्होंने काफी खोज की। अनेक किताबें लिख चुके डॉ. स्टीफन के अनुसार उन्होंने भारत के मंदिरों के इतिहास की खोज कर उन पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

प्राइमरी शिक्षा में शामिल रामायण बैंकाक की सिल्पाकॉर्न यूनिवर्सिटी के एसोसिएटेड प्रोफेसर बूंमरूग खाम–ए का कहना है कि थाईलैंड में रामायण लिटरेचर की तरह स्कूल और कॉलेजों के पाठ्यक्रम में शामिल है। यूनिवर्सिटी के खोन (नाट्य) विभाग के छात्र रामलीला को सबसे अधिक पसंद करते हैं। रामायण को थाईलैंड में रामाकेन और रामाति बोलते हैं। वाल्मीकि रामायण से मिलती जुलती रामाकेन में थाई कल्चर का समावेश है। यहीं नहीं यूनिवर्सिटी के अनेक विद्यार्थी रामायण पर पीएचडी कर रहे हैं। इसमें से कुछ वर्ल्ड रामायण कांफ्रेंस में शामिल होने जबलपुर आए हैं।

इनकी टीम अमेरिका में करती है रामलीला

महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमेंट पेयरफिल्ड, लोवा यूएसए के प्रोफसर माइकल स्टार्नफिल्ड ने कहा कि 25 साल पहले यूनिवर्सिटी में अचानक महर्षि वाल्मीकि की तस्वीर में उन्हें अपने पिता की सूरत नजर आई। महर्षि के बारे में जानकारी एकत्रित की और वाल्मीकि रामायण पढ़ी तभी से रामायण का दीवाना हो गया। अमेरिका में उनकी 400 लोगों की एक टीम है, जिसमें बच्चे, युवा व बुजुर्ग शामिल हैं, जो वाल्मीकि रामायण पर आधारित रामलीला करते हैं। सबकी ड्रेस भारतीय रामलीला से मिलती जुलती है।

ये हिंदी प्रेमी हैं

थाईलैंड से आईं हिंदी प्रेमी चारिया धर्माबून पढाई के दौरान भगवान श्री राम के चरित्र से प्रभावित होकर रामायण पर पीएचडी कर रहीं हैं। इस दौरान उन्होंने अपने हिंदी प्रेम को टीशर्ट पर 'हम हिंदी प्रेमी हैं' के रूप में भी लिखा रखा है। इस जगह की रामायण में हनुमानजी ब्रह्मचारी नहीं प्रोफेसर बंमरूग खाम–ए का कहना है कि भारत की वाल्मीकि रामायण में हनुमान जी को ब्रह्मचारी बताया गया है। वहीं थाईलैंड की रामायण (रामाकेन) में हनुमानजी की पत्नी और पुत्र का उल्लेख है। (26 दिसं.)

http://hindi.revoltpress.com

जर्मनी में शाकाहार का प्रचलन तेजी पर

भारतीय खासकर हिन्दू जब भी विदेश में जाने की चाह रखते हैं, तो अक्सर उन्हें खाने की समस्या होती है, क्यूंकि आज भी हिन्दुओं का बहुत बड़ा तबका शाकाहारी है। मगर अब शाकाहारी लोगों को विदेश में, विशेष तौर पर जर्मनी में इस खाने की समस्या से नहीं जूझना पड़ेगा।

बता दें कि इन दिनों जर्मनी में न सिर्फ शाकाहारी खाना बल्कि शाकाहार से भी शुद्ध वीगन खाने का ट्रेंड चलन पर है। वीगन खाना यानीं जिसमें जानवरों से मिलने वाली किसी चीज का भी उपयोग नहीं किया जाता है। और यहाँ वीगन खाने के ढेरों रेस्टोरेंट हैं। हालाँकि सभी रेस्टोरेंट में भीड़ लगातार बढती जा रही है। वीगन खाने में दूध–घी तक का उपयोग भी नहीं किया जा रहा। इस कारण यहाँ नए नए खाने के भी ट्रेंड चल रहे हैं, जैसे सोया की कॉफी और बिना अंडे का केक, आदि। खाने के साथ उन कपड़ों की डिमांड भी बढ़ी है जिनमें पशुओं के उत्पाद का प्रयोग नहीं किया गया है।

अतः वीगन ट्रेंड न सिर्फ अपनाने वालों के लिए एक नयापन है, बल्कि इसकी सर्विस देने वालों के लिए भी कुछ नया कर गुजरने जैसा है। यहाँ के एक व्यक्ति ने वीगन सैलून तक बना लिया है। जिसमें कुर्सी, सोफे से लेकर साबुन, शैम्पू, क्रीम इत्यादि सलून उपयोगी प्रोडक्ट्स और इक्विपमेंटस में, किसी में भी पशु उत्पादों का प्रयोग नहीं किया गया है। (25 दिस.)

http://hindi.revoltpress.com

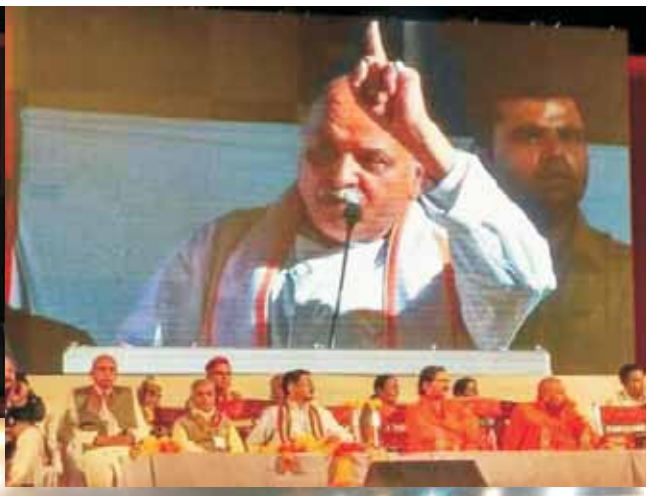

विहिप-केन्द्रीय प्रन्यासी मंडल बैठक के अवसर पर नागपुर में आयोजित सभा का विहंगम दृश्य

शासकीय अवरोधों के बावजूद धूलागढ़ के उत्पीड़ित हिंदुओं की विहिप ने सुध ली।

चिकमंगलूर (कर्नाटक) में बजरंग दल द्वारा 14 दिस. 2016 को माला अभियान, दत्त जयन्ती उत्सव को सम्बोधित करते विहिप-के.सं. महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन।

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-1/4031/2015-17
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
मुद्रण- तिथि : 13.01.17
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

LPS BOSSARD

MORE THAN NUTS AND BOLTS

LPS Bossard is a leading supplier of intelligent solutions for industrial fastening technology. The company's complete protfolio for fasteners includes sales, technical consulting (engineering) and inventory management (logistics).Its customers include local and multi-national industrial companies who use LPS Bossard's solutions to improve their productivity.

MR. RAJESH JAIN
MD,LPS BOSSARD

LPS Bossard Pvt. Ltd.
NH-10,Delhi Road,Kharawar Bye Pass
Rohtak-124001 (INDIA)
Phone: +91-1262 305164-200 Fax : +91-1262 305111,112
Email: india@lpsboi.com website : www.bossard.com

प्रकाशक व मुद्रक परमानन्द मनोहर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'साइबर क्रिएशन्स' जे.ई.–9, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली–17 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : मानवेन्द्र नाथ पंकज